सोती हुई सुन्दरी जैसी कहानियाँ

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Soti Hui Sundari Jaisi Kahaniyan-6 (Sleeping Beauty Like Stories-6)
Cover Page picture : Sleeping Beauty
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

सोती हुई सुन्दरी जैसी कहानियाँ 5

1 सोती हुई सुन्दरी 7

2 छोटा काँटे वाला गुलाब 17

3 शीशे का ताबूत 24

4 सूरज, चाँद और तालिया 38

5 सोती हुई सुन्दरी और उसके बच्चे 50

6 जंगल में सोती हुई सुन्दरी 65

7 बहू ऐथना 87

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई 2018

सोती हुई सुन्दरी जैसी कहानियाँ

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं।

बच्चों जैसे तुम लोग कहानियाँ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहाँ के बच्चे कहानियाँ सुनते हैं। क्योंकि कहानियाँ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियाँ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहाँ कुछ ऐसी ही कहानियाँ दी जा रही हैं। ये सब कहानियाँ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियाँ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियाँ हैं। ऐसी कहानियाँ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियाँ कही गयीं हैं।

इस सीरीज़ में, यानी "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में, इससे पहले हम छह पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियाँ"। इस पुस्तक में कुछ ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें कोई एक किसी से कोई काम कराना चाहता है पर वह दूसरा उस काम को तब तक नहीं करता जब तक उसकी अपनी शर्त पूरी नहीं हो जाती सो उसको उसकी शर्त पूरी करने के लिये काम करने वाले को कहीं और जाना पड़ता है। और यह कड़ी तब तक चलती रहती है जब तक उसका अपना काम नहीं हो जाता।[1]

इसकी दूसरी पुस्तक में "टौम थम्ब जैसी कहानियाँ" दी गयीं हैं। इसमें बहुत छोटे बच्चे की करामातों की कथाऐं हैं।[2]

इस सीरीज़ की तीसरी पुस्तक "छह हंस" जैसी कुछ कहानियों का संग्रह है जिसकी कहानियों की हीरोइन एक छोटी लड़की, साधारणतया सबसे छोटी बहिन, होती है जो अपने दो या चार या सात भाइयों को पक्षी या जानवर बन जाने के शाप से छुटकारा दिलाती है। ये सब कहानियाँ बहिन भाई के प्यार की कहानियाँ हैं।[3]

इस सीरीज़ की चौथी पुस्तक कुछ ऐसी कहानियों का संग्रह है जो "तीन सन्तरे" कहानी जैसी हैं।[4]

इसी सीरीज़ की पाँचवीं पुस्तक में "सफेद राजकुमारी और सात बौने"[5] वाली कहानी जैसी कुछ कहानियाँ दी गयी हैं। यह कहानी यूरोप के देशों की एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी है।

इस सीरीज़ की छठी पुस्तक में "सोती हुई सुन्दरी..." जैसी कहानियाँ हैं।[6] इस सीरीज़ की इस पुस्तक में कुछ ऐसी कहानियों का संग्रह है जो "सोती हुई सुन्दरी" लोक कथा से मिलती जुलती हैं। इस कहानियों में लड़कियाँ शाप की वजह से सो जाती हैं और वे तभी उठती हैं जब कोई राजकुमार आ कर उन्हें उठाता है।

हमें विश्वास है कि ऐसी कहानियों का यह संग्रह भी तुम लोगों को पिछले पाँच संग्रहों की तरह से बहुत पसन्द आयेगा।

---

[1] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"
[2] "One Story Many Colors-2" – like "Tom Thumb"
[3] "One Story Many Colors-3" – like "Six Swans"
[4] "One Story Many Colors-4" – like "Three Oranges"
[5] "One Story Many Colors-5" – like" Snow White and the Seven Dwarves"
[6] "One Story Many Colors-6" – like "Sleeping Beauty"

1 सोती हुई सुन्दरी[7]

स्लीपिंग ब्यूटी अंग्रेजी में और सोती हुई सुन्दरी हिन्दी में कहानी भी यूरोप के देशों की एक बहुत ही लोकप्रिय और मशहूर कहानी है जो बच्चों को उनके बचपन में ही सुनायी जाती है।

पर यह कहानी दूसरे तरीकों से दूसरे देशों में भी कही सुनी जाती है। सोती हुई सुन्दरी जैसी कहानियों के इस संग्रह में हम ऐसी ही कुछ कहानियाँ प्रकाशित कर रहे हैं जो इस कहानी से मिलती जुलती हैं। इस संग्रह की यह पहली कहानी हमने यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ली है।

हो सकता है कि यह लोक कथा तुम लोगों ने भी पढ़ी सुनी हो पर देखो कि यह कथा तुमने ऐसे ही पढ़ी सुनी है या किसी और ढंग से। अगर किसी ओर ढंग से पढ़ी सुनी हो तो हमें जरूर लिखना कि तुमने यह लोक कथा किस तरह से पढ़ी सुनी है।

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी थे जो बहुत ही दुखी रहते थे क्योंकि उनके कोई बच्चा नहीं था। पर आखिर उनके एक बच्ची हुई और उनका दुख खुशी में बदल गया। उनके सारे राज्य में खबर फैल गयी कि राजा के बेटी हुई है।

---

[7] Sleeping Beauty – a folktale from Germany, Europe.
Adapted from “Sleeping Beauty” written by Grimm Brothers.
Its English version may be read at :
http://etc.usf.edu/lit2go/68/fairy-tales-and-other-traditional-stories/5102/sleeping-beauty/

उसकी क्रिस्टिनिंग[8] की रस्म पर राजा ने इतनी बड़ी दावत दी कि राज्य के किसी आदमी ने वैसी दावत कभी नहीं देखी थी।

राजा ने अपने राज्य की उन सारी परियों को बुलाया था जिनको भी वह वहाँ पा सका। कुल मिला कर ये परियाँ सात थीं। वे सब उसकी गौडमदर[9] की हैसियत से बुलायी गयी थीं। राजा को उनसे यह उम्मीद थी कि वे सब उसको कुछ अच्छी भेंटें देंगी।

जब क्रिस्टिनिंग की रस्म खत्म हो गयी तो दावत शुरू हुई। हर परी के सामने सोने की एक प्लेट, एक छुरी, एक काँटा और एक चम्मच रखी गयी।

पर अफसोस जब सब परियाँ खाना खाने बैठीं तो एक बहुत बूढ़ी परी कमरे में घुसी। राजा ने उसको नहीं बुलाया था क्योंकि वह 50 साल पहले ही उसका राज्य छोड़ कर चली गयी थी और उसके बारे में किसी को कुछ भी पता नहीं था कि वह कहाँ थी।

और आज वह अचानक वहाँ प्रगट हो गयी थी।

राजा ने उसको देखते ही एक और सोने की प्लेट का सैट लाने का हुक्म दिया पर उसके लिये वह वैसी ही प्लेट के सैट का इन्तज़ाम नहीं कर सका जैसी कि दूसरी परियों की थीं।

---

[8] A Christian ceremony where the child officially becomes Christian. In this ceremony either the child is immersed in water, or water is sprinkled or poured over his/her head by the Priest.

[9] A godmother is a female godparent in the Christian tradition. A Godmother may also refer to: a female arranged to be legal guardian of a child if an untimely demise is met by the parents.

इससे वह बूढ़ी परी बहुत नाराज हो गयी और कुछ कुछ बुड़बुड़ाती हुई वहाँ बैठ गयी। एक नौजवान परी जो उसके पास ही बैठी हुई थी उसने वह सब सुन लिया जो वह उस बच्ची के लिये धमकी के तौर पर बुड़बुड़ा रही थी।

नौजवान परी को उस बूढ़ी परी की धमकी अच्छी नहीं लगी सो वह उस कमरे के दरवाजे के एक परदे के पीछे जा कर छिप कर खड़ी हो गयी ताकि वह बच्ची को सबसे आखीर में कोई अच्छा आशीर्वाद दे सके जिससे वह बूढ़ी परी की धमकी का असर अगर खत्म न कर सके तो कम से कम कम तो कर सके।

और हो सकता है कि वह उस बूढ़ी परी की भेंट को ही बदल सके।

जब दावत खत्म हो गयी तो सबसे छोटी परी आगे आयी और बोली — "यह राजकुमारी दुनियाँ में सबसे सुन्दर होगी।"

दूसरी परी बोली — "इसका स्वभाव किसी देवदूत[10] के स्वभाव की तरह बहुत ही मीठा होगा।"

तीसरी परी बोली — "यह जो भी कुछ करेगी या बोलेगी बड़ी शान से करेगी और बोलेगी।"

चौथी परी बोली — "यह कोयल की तरह से गायेगी।"

पाँचवीं परी बोली — "यह उसी तरह से नाचेगी जैसे फूल हवा में नाचता है।"

[10] Translated for the word "Angel"

छठी परी बोली — "यह इतना अच्छा संगीत बजायेगी जैसा कभी किसी ने सुना भी न होगा।"

इसके बाद उस बूढ़ी परी की बारी आयी। घृणा से अपना सिर हिलाती हुई वह बोली — "जब यह राजकुमारी **17** साल की होगी तो इसकी उँगली में तकुआ चुभ जायेगा और यह मर जायेगी।"

यह सुन कर वहाँ आये हुए सारे लोग काँप गये और उनमें से कुछ तो रोने लगे। उन रोने वालों में से राजा और रानी सबसे ज़्यादा ज़ोर से रो रहे थे।

उसी समय वह नौजवान परी जो परदे के पीछे छिप गयी थी परदे से बाहर निकली और बोली — "ओ राजा और रानी, आप दुखी न हों। आपकी बेटी मरेगी नहीं। मैं अपनी बड़ी बहिन के कहे को उलटा तो नहीं कर सकती पर उसको हल्का जरूर कर सकती हूँ।

राजकुमारी की उँगली में तकुआ तो चुभेगा ही पर वह मरेगी नहीं। वह केवल **100** साल के लिये सो जायेगी। **100** साल के बाद एक राजकुमार वहाँ आयेगा और वही आ कर उसको जगायेगा।" उसी समय सारी परियाँ वहाँ से गायब हो गयीं।

राजा ने अपनी बेटी को इस बदकिस्मती से बचाने के लिये कि उसको **17** साल की उम्र में कहीं कोई तकुआ न चुभ जाये राज्य भर में यह हुकुम जारी कर दिया कि राज्य में जितने भी तकुए हों वे सब

जला दिये जायें। राजा का हुकुम था सो उसके हुकुम से यह सब बहुत जल्दी ही हो गया पर सब बेकार।

और फिर एक दिन वह भी आया जब राजकुमारी **17** साल की हुई। राजा और रानी ने यह देख कर कि राजकुमारी अब **17** साल की होने वाली है उसको एक किले में बन्द कर दिया। अब वहाँ उसके पास कुछ काम तो था नहीं सो वह चारों तरफ घूम घूम कर उस किले को देखने लगी।

एक दिन वह मीनार के सबसे ऊपर वाले कमरे में पहुँच गयी। वहाँ एक बहुत बूढ़ी स्त्री बैठी सूत कात रही थी। इससे ऐसा लगता था कि वह शायद कुछ कम सुनती थी क्योंकि राजा के हुकुम के बावजूद वह सूत कात रही थी।

राजकुमारी ने पहले किसी को सूत कातते देखा नहीं था सो वह यह जान ही नहीं सकी कि वह बुढ़िया कर क्या रही थी। उसने उस बुढ़िया से पूछा — "माँ जी यह आप क्या कर रही हैं?"

"बेटी, मैं सूत कात रही हूँ।"

"ओह, यह आप कैसे कर रही हैं? मैं भी देखूँ कि मैं भी सूत कात सकती हूँ कि नहीं।"

"हाँ हाँ क्यों नहीं।" कह कर बुढ़िया ने उसको अपना तकुआ दे दिया। जैसे ही उसने वह तकुआ अपने हाथ में लिया कि किसी तरह से वह उसकी उँगली में चुभ गया। उसके चुभते ही राजकुमारी बेहोश हो कर गिर पड़ी।

बुढ़िया तो यह देख कर डर ही गयी और सहायता के लिये चिल्लाने लगी। उसकी चिल्लाना सुन कर चारों तरफ से लोग उसकी सहायता के लिये दौड़े पर कोई उसकी कोई सहायता नहीं कर सका।

जब उस छोटी नौजवान परी ने यह खबर सुनी तो वह तुरन्त ही किले की तरफ दौड़ी। उसको मालूम था कि अब वह राजकुमारी **100** साल तक सोयेगी और जब वह उठेगी तब अगर उसने अपने आपको अकेला पाया तो वह डर जायेगी।

सो उसने महल में सिवाय राजा और रानी के सबको अपनी जादू की छड़ी से छुआ – नौकर चाकर, दासियाँ, चौकीदार, घुड़साल देखने वाले और घोड़े भी।

उसकी जादू की छड़ी छूते ही सब जहाँ थे वहीं तुरन्त ही सो गये। कुछ लोग जो कुलीन स्त्रियों को झुक कर नमस्ते कर रहे थे वे वैसे ही खड़े के खड़े रह गये।

कुछ स्त्रियाँ जो कढ़ाई कर रही थीं वे भी वैसी की वैसी सो गयीं। रसोइये जो अपने नौकरों को मार रहे थे वे भी वैसे के वैसे ही खड़े रह गये।

राजा और रानी किले से चले गये और सबको कह दिया गया कि राजकुमारी वाले किले के पास कोई न जाये।

हालाँकि इस हुक्म की कोई ज़रूरत नहीं थी क्योंकि कुछ ही पलों में उस किले के चारों तरफ इतना घना जंगल उग आया जिसमें न तो कोई आदमी और न ही कोई जंगली जानवर घुस सकता था।

समय गुजरते देर नहीं लगती। **100** साल भी जल्दी ही निकल गये। इन **100** सालों में बहुत सारे बदलाव आ गये। राजा और रानी दोनों ही मर गये थे।

जब राजा मर गया तो क्योंकि उसके और कोई बच्चा नहीं था इसलिये उसकी राज गद्दी किसी दूसरे शाही परिवार को चली गयी। और कुछ दिनों में तो लोग सोती हुई राजकुमारी को भी भूल गये।

फिर एक दिन उस देश के राजा का बेटा जो उस समय वहाँ राज कर रहा था शिकार के लिये बाहर निकला। उसने देखा कि एक घने जंगल के ऊपर किसी किले की मीनारें निकली हुई हैं। उसने उन मीनारों के बारे में लोगों से पूछा भी पर उनके बारे में कोई उसको कुछ न बता सका।

फिर उसको एक बूढ़ा किसान मिला जिसने राजकुमार को बताया — "योर हाईनैस, **50** साल पहले मेरे पिता ने मुझे बताया था कि जंगल में एक किला है जहाँ एक राजकुमारी सो रही है। वह राजकुमारी बहुत सुन्दर है।

उन्होंने मुझे यह भी बताया था कि वह **100** साल तक उस किले में सोयेगी। फिर कोई राजकुमार आ कर उसे जगायेगा तभी वह उठेगी।"

यह सुन कर राजकुमार ने सोचा कि वह इस बारे में खुद ही पता लगायेगा कि असली मामला क्या है सो वह उस किले की तरफ चल दिया।

वह अपने घोड़े से कूदा और उस जंगल में घुसने लगा। उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जब वह उस जंगल में घुस रहा था तो उन पेड़ों की शाखाएं अपने आप ही हट हट कर उसको अन्दर जाने का रास्ता दे रही थीं।

लेकिन उसके निकल जाने के बाद वे फिर बन्द हो जाती थीं जैसे कह रही हों कि बस केवल तुम ही जा सकते हो तुम्हारे पीछे वाला और कोई नहीं।

कुछ दूर जाने पर उसको एक बहुत सुन्दर किला खड़ा दिखायी दिया। उसके ऑगन में राजकुमार ने बहुत सारे घोड़े ओर उनकी देखभाल करने वाले देखे जो मरे हुए लग रहे थे।

पर वह उनसे डरा नहीं और किले के अन्दर चलता ही चला गया। वहॉ जा कर उसने देखा कि वहॉ के चौकीदार आदमी स्त्रियॉ सभी पत्थर की मूर्ति बने खड़े थे या बैठे थे।

आखिर वह राजकुमार एक सोने के बने हुए कमरे में आया।

उसमें उसने एक बड़ा ही सुन्दर दृश्य देखा। एक पलंग पर **17** साल की बहुत सुन्दर लड़की सोयी हुई थी जैसे वह अभी अभी सोयी हो।

काँपते हुए वह उसके पलंग के पास ही अपने घुटनों पर बैठ गया और उसको चूम कर जगाने की कोशिश की। जैसे ही उसने राजकुमारी को चूमा तो उसका जादू टूट गया और वह उठ कर बैठी हो गयी।

वह आश्चर्य से बोली — "अरे मेरे राजकुमार, यह क्या तुम हो? मैंने तुम्हारा कितना इन्तजार किया और तुम अब आये हो?"

वे दोनों इतने खुश थे कि घंटों बैठे बैठे बात करते रहे। इस बीच महल में वे सारे लोग भी जाग गये थे जिनको परी अपनी जादू की छड़ी से सुला कर गयी थी।

उन्होंने सबने अपना वही काम करना शुरू कर दिया जो काम वह करते करते सोये थे। जो कुलीन लोग स्त्रियों को सिर झुका रहे थे उन्होंने उनको सिर झुकाना शुरू कर दिया।

जो स्त्रियाँ कढ़ाई कर रही थीं उन्होंने अपनी कढ़ाई करनी शुरू कर दी। जो घोड़ों की देखभाल कर रहे थे उन्होंने घोड़ों की देखभाल करनी शुरू कर दी। रसोइया जो अपने नौकर को मार रहा था उसने उसको मारना शुरू कर दिया।

नौकरों ने खाना लगाना शुरू कर दिया तो राजकुमारी की दासी ने कहा कि शाम का खाना तैयार था।

राजकुमार ने अपना हाथ बढ़ा कर राजकुमारी को उठाया और दोनों खाना खाने के लिये खाने के कमरे की तरफ चल दिये।

उसी शाम उन दोनों की शादी हो गयी। अगले दिन राजकुमार राजकुमारी को अपने महल ले गया और फिर वे दोनों हमेशा खुशी खुशी रहे।

2 छोटा कॉटे वाला गुलाब[11]

सोती हुई सुन्दरी कहानी जैसी एक कहानी और। यह कहानी यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक राजा और एक रानी थे जिनके कोई बच्चा नहीं था हालाँकि उनकी बहुत इच्छा थी कि उनके एक बच्चा हो पर शायद अभी भगवान उनकी सुन ही नहीं रहा था।

एक दिन रानी नदी में नहा रही थी कि एक केंकड़ा[12] पानी में से बाहर जमीन पर रेंग आया और रानी से बोला — "ओ रानी, तुम्हारी इच्छा बहुत जल्दी ही पूरी होगी। तुम्हारे घर एक बेटी जन्म लेगी।" और फिर वैसा ही हुआ।

राजा राजकुमारी के जन्म से इतना खुश था कि उसने उसका जन्म बहुत धूमधाम से मनाया। उसमें उसने अपने राज्य में रहने वाली परियों को भी बुलाया। उसके राज्य में 13 परियाँ रहती थीं

[11] Little Brier-Rose – a folktale from Germany, Europe. By Jacob and Wilhelm Grimm in their book "Kinder- und Hausmarchen". Its English version by DL Ashliman may be read at the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0410.html

[12] Translated for the word "Crab" – see its picture above.

पर क्योंकि उसके पास केवल 12 ही सोने की प्लेटें थीं सो उसको एक परी को छोड़ देना पड़ा।[13]

सब परियाँ उस बच्ची के जन्म पर राजा के घर आयीं। जब सब कुछ खत्म हो गया तो वे सब बच्ची को भेंट देने लगीं। एक ने उसे गुणवान होने की भेंट दी तो दूसरी ने उसको सुन्दरता दी।

इस तरह हर परी ने बच्ची को बहुत अच्छी अच्छी चीज़ें भेंट में दीं। ग्यारहवीं परी ने अभी अपनी भेंटें उसको दी ही थी कि तेरहवीं परी वहाँ आ गयी।

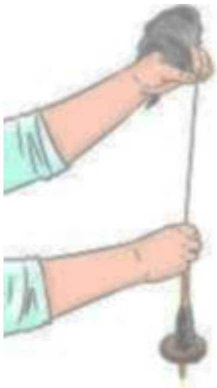

तेरहवीं परी बहुत गुस्सा थी क्योंकि उसको तो वहाँ बुलाया नहीं गया था सो वह आते ही बोली — "क्योंकि तुमने मुझे नहीं बुलाया इसलिये मैं तुमको शाप देती हूँ कि जब तुम्हारी यह बच्ची 15 साल की होगी तो इसके हाथ में तकली[14] चुभ जायेगी और यह मर जायेगी।

यह सुन कर राजा और रानी दोनों ही बहुत डर गये। पर अभी बारहवीं परी अपनी भेंट देने से बची थी। वह बोली — "यह मरेगी नहीं बल्कि 100 साल के लिये सो जायेगी।"

---

[13] This is ridiculous for a King to leave one Fairy just becaue he did not have 13 gold plates. But, well, this is a story…

[14] Translated for the word "Spindle" – see its picture above.

राजा ने उसकी इस बदकिस्मती को टालने के लिये अपने राज्य भर में यह घोषणा करवा दी कि उसके राज्य की सारी तकलियाँ नष्ट कर दी जायें।

राजकुमारी बड़ी होती गयी और एक बहुत सुन्दर नौजवान लड़की बन गयी। एक दिन जब वह **15** साल की होने वाली थी तो राजा और रानी उसको महल में अकेला छोड़ कर कहीं चले गये।

अब राजकुमारी की इच्छा हुई कि वह महल के हर कमरे को देखे तो वह महल में इधर से उधर घूमने लगी। घूमते घूमते वह महल की एक पुरानी मीनार में आयी।

उसमें ऊपर जाने के लिये बहुत ही तंग सीढ़ियाँ थीं। उस मीनार को देखने की उत्सुकता में वह उन सीढ़ियों से ऊपर चढ़ती चली गयी और एक दरवाजे पर आ गयी।

उस दरवाजे के ताले में एक पीले रंग की चाभी लगी हुई थी। उसने उस चाभी को घुमाया तो वह दरवाजा खुल गया। दरवाजे में से वह अन्दर घुसी तो वह एक छोटे से कमरे में आ गयी। उस कमरे में एक बुढ़िया बैठी हुई रुई कात रही थी।

राजकुमारी बुढ़िया की तरफ खिंची चली गयी और उससे कुछ मजाक करने लगी। उसने उससे यह भी कहा कि वह भी रुई कातना चाहेगी।

सो उसने भी उसकी कई तकलियों में से एक तकली उठा ली और जैसे ही उसने वह तकली उठायी कि उस तकली से उसका हाथ छिद गया और वह नीचे गिर गयी और गहरी नींद सो गयी।

उसी समय राजा और उसके नौकर चाकर घर वापस आ गये और वे सव सोने लग गये – घोडे घुड़साल में, कबूतर छत पर, कुत्ते ऑगन में, मक्खियॉ दीवारों पर। यहॉ तक कि भट्टी में आग भी पहले झपझपाने लगी फिर शान्त हो गयी और सो गयी। जो चीज़ें रसोई में भुन रही थीं वे सब ठंडी पड़ने लगीं।

रसोइया जो अपने नौकर के बाल खींचने वाला था उसने उसे छोड़ दिया क्योंकि उसको नींद आने लगी थी। दासी एक मुर्गी के पंख साफ कर रही थी वह मुर्गी उसके हाथ से गिर गयी क्योंकि वह भी सो गयी थी। इस तरह वे सब सो गये।

इस बीच पूरे महल के चारों तरफ एक कॉटों वाली हैज[15] उग आयी जो ऊपर की तरफ बढ़ती जा रही थी। वह बढ़ती ही गयी जब तक उसमें से अन्दर का कुछ भी दिखायी देना बन्द नहीं हो गया।

[15] Hedge is a kind of wall made of plants so thickly grown together that cannot be crossed by any ordinary animal and people alike. It is a protective wall of plamts, a type of curtain between the house and the road and a beautiful decorative piece too – see its picture above.

राजकुमार जिन्होंने भी इस कॉटे वाले गुलाब के बारे में सुना वे सब उस राजकुमारी को आजाद कराने के लिये वहॉ आये पर वे हैज के अन्दर ही नहीं घुस सके।

ऐसा लग रहा था जैसे उस हैज के कॉटे आपस में बहुत अच्छी तरह से गुॅथे हुए हों। सो जो राजकुमार भी उसके अन्दर जाने की कोशिश करता था वह उन कॉटों में फॅस जाता था और बहुत बुरी मौत मारा जाता।

इस तरह से कई साल बीत गये और फिर एक दिन एक और राजकुमार उधर से निकला तो एक बूढ़े ने उसको इस विश्वास के बारे में बताया कि कि उसके बाबा ने उसको बताया था कि उस कॉटों वाली हैज के उस पार एक महल है जिसमें एक बहुत सुन्दर राजकुमारी अपने सारे दास दासियों के साथ सोयी हुई है।

उस बूढ़े के बाबा ने उसको यह भी बताया था कि बहुत सारे राजकुमारों ने उस हैज को पार करने की कोशिश की पर उनके उस हैज के कॉटे चुभ गये और वे उन कॉटों की वजह से मारे गये।

वह राजकुमार बोला — "मैं उन कॉटों से नहीं डरता। मैं उस हैज को पार करूॅगा और उस कॉटों वाले गुलाब राजकुमारी को आजाद करा कर लाऊॅगा।"

सो वह उस हैज की तरफ चल दिया। जब वह हैज के पास पहॅुचा तो उस हैज में लगे कॉटे तो फूल बन गये। उस हैज के पेड़

भी उसको रास्ता देने के लिये अलग अलग हो गये और वह उस हैज में से आसानी से हो कर निकल गया।

पर जैसे ही उसने वह हैज पार की उस हैज के फूल फिर से कॉटों में बदल गये और वह हैज भी जो उसको रास्ता देने के लिये अलग अलग हो गयी थी फिर से पास आ गयी।

वह हैज पार करके महल में चला गया जहाँ घोड़े और बहुत तरीके के कई रंगों के शिकारी कुत्ते उस महल के ऑगन में सोये पड़े थे। कबूतर छत पर बैठे थे और उन्होंने अपने सिर अपने पंखों में छिपा रखे थे।

वह और अन्दर गया तो उसने देखा कि मक्खियॉ दीवारों पर सोयी पड़ी थीं, आग भट्टी में बुझी पड़ी थी, रसोइया और दासी भी सोये पड़े थे।

वह और आगे बढ़ा तो सारे नौकर चाकर सोये हुए थे, यहाँ तक कि राजा और रानी भी। वहाँ सब इतना शान्त था कि उसको अपनी सॉसों की आवाज तक साफ सुनायी पड़ रही थी।

आखीर में वह उस मीनार में आया जिसमें राजकुमारी नीचे फर्श पर गिरी सो रही थी। वह राजकुमार उसकी सुन्दरता को देख कर उससे इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसको झुक कर चूम लिया।

राजकुमार के चूमते ही वह राजकुमारी उसी समय जाग गयी और उसके साथ साथ और सब भी जाग गये – सारे जानवर कुत्ते घोड़े और मक्खियॉ, सारे दास दासियॉ, राजा और रानी।

आग भी जल उठी और खाना पकाने लगी। दासी उठ कर मुर्गी के पंख साफ करने लगी। मुर्गा भी भुनने लगा। रसोइया अपने नौकर के कान ऐंठने लगा।

राजकुमार और काँटों वाले गुलाब की शादी हो गयी। वे जब तक रहे खुशी खुशी रहे।

3 शीशे का ताबूत[16]

सोती हुई सुन्दरी जैसी यह कहानी भी यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

किसी को यह बात कभी नहीं कहनी चाहिये कि कोई गरीब दरजी बेचारा कभी कोई बड़ा काम कर ही नहीं सकता।

इसके लिये तो बस इस बात की जरूरत है कि उसको सही जगह पर मौजूद होना चाहिये। और उससे भी बड़ी बात यह है कि उसकी किस्मत उसके साथ होनी चाहिये।

एक बार एक दरजी का नौकर घूमने के लिये यात्रा पर गया और घूमते घूमते एक जंगल में पहुँच गया। वहाँ उसको रास्ते का पता नहीं था सो वह उस जंगल में खो गया। रात हो गयी और अब उसको करने के लिये भी कुछ नहीं था। अब तो उसको बस सोना था। पर वह अब कहाँ सोये।

उसको यकीनन ही वहाँ पर सोने के लिये अच्छी मुलायम घास मिल जाती अगर उसको वहाँ जंगली जानवरों का डर न होता तो। पर जंगली जानवरों के डर की वजह से उसने एक पेड़ के ऊपर सोने का विचार किया।

[16] The Glass Coffin – a folktale from Germany, Europe. Taken from "Household Tales" By Brothers Grimm. Translated by Margaret Hunt. Its English version may be read at https://ebooks.adelaide.edu.au/g/grimm/g86h/chapter164.html

इसके लिये उसने एक ऊँचा सा ओक का पेड़[17] ढूँढा, उसके ऊपर चढ़ा और भगवान को धन्यवाद दिया कि उसकी बतख उसके पास थी। नहीं तो जिस रफ्तार से ऊपर वहाँ हवा बह रही थी उस हवा से तो वह वहाँ से उड़ ही जाता।

कई घंटे वहाँ अँधेरे में डर से काँपते हुए बिताने के बाद उस को पास ही एक हल्की सी रोशनी दिखायी दी। उसने सोचा कि शायद कुछ लोग वहाँ रहते होंगे तो वह यहाँ इस पेड़ की शाखाओं पर अपनी रात गुजारने की बजाय वहाँ ज़्यादा आराम से अपनी रात गुजारेगा।

सो वह उस पेड़ पर से सँभाल कर नीचे उतरा और उस रोशनी की तरफ चल दिया। उस रोशनी के सहारे से वह एक छोटी सी झोंपड़ी तक पहुँच गया। वह झोंपड़ी सरकंडे[18] और डालियों की बनी हुई थी

वहाँ जा कर उसने बड़ी हिम्मत से उस झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुला तो वहाँ उसने उस झोंपड़ी की धुँधली

[17] Oak tree is a tall shady tree.
[18] Translated for the word "Reed" – see its picture above.

रोशनी में एक बूढ़ा देखा जिसने कई रंग के फटे कपड़ों को जोड़ कर सिला हुआ एक कोट पहन रखा था।

उस बूढ़े ने शिकायत भरी आवाज में उससे पूछा — "तुम कौन हो और तुम्हें क्या चाहिये?"

दरजी का नौकर बोला — "मैं एक गरीब दरजी हूँ। यहाँ इस जंगल में मुझे रात हो गयी है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे कल सुबह तक अपने घर में शरण देने की मेहरबानी करें।"

उस बूढ़े ने कुछ तीखी आवाज में कहा — "जाओ यहाँ से। मैं ऐसे घूमते फिरते आदमियों से कोई वास्ता नहीं रखता। तुम अपने लिये कहीं और जा कर शरण ढूँढो।"

यह कह कर वह अपनी झोंपड़ी में अन्दर जाना चाहता ही था कि उस दरजी ने उसके कोट का कोना कस कर पकड़ लिया और उससे बहुत ही रोते हुए उसको शरण देखने की प्रार्थना की।

वह आदमी अब इतना बुरा भी नहीं था जैसा कि वह देखने में लगता था। उसका दिल उसकी प्रार्थना सुन कर पिघल गया सो वह उसको अन्दर अपनी झोंपड़ी में ले गया। उसने उसको कुछ खाने को दिया और एक कोने में बिछा हुआ बहुत अच्छा बिस्तर सोने के लिये दिया।

दरजी थका हुआ था सो वह जल्दी ही सो गया और बस सुबह ही उठा। हालाँकि वह उठना तो नहीं चाहता था पर बाहर से आते शोर ने उसको उठने पर मजबूर कर दिया। चीखने चिल्लाने की

बहुत तेज़ आवाजें झोंपड़ी की पतली दीवारों से छन छन कर अन्दर तक आ रही थीं।

वह हिम्मत करके उठा अपने कपड़े पहने और जल्दी से बाहर निकला। उसने देखा कि एक काला बैल और एक सुन्दर बारहसिंगा दोनों लड़ने की तैयारी कर रहे थे। वे एक दूसरे के ऊपर इतने ज़ोर से हमला करने के लिये दौड़े कि उनके पैरों के नीचे की सारी जमीन हिल गयी।

कुछ समय तक तो यह पता ही नहीं चला कि दोनों में से कौन जीतेगा पर काफी देर के बाद बारहसिंगे ने अपने सींग उस काले बैल के पेट में घुसा दिये। इससे वह बैल बहुत ज़ोर से चिंघाड़ता हुआ जमीन पर गिर पड़ा।

दरजी जो अभी तक यह लड़ाई बड़े आश्चर्य से देख रहा था अभी भी बिना हिले डुले खड़ा था कि वह बारहसिंगा उसकी तरफ दौड़ा। इससे पहले कि वह उससे बचता उसने उसे अपने सींगों पर उठा लिया।

उसके पास इतना भी समय नहीं था कि वह कुछ सोच सकता क्योंकि बारहसिंगा उसको ले कर तुरन्त ही पत्थरों, पहाड़ों, घाटियों, मैदानों, और जंगलों से हो कर बहुत तेज़ी से भाग लिया।

उसने बारहसिंगे के सींग ऊपर से कस कर पकड़ रखे थे। क्योंकि और तो वह कुछ कर नहीं सकता था सो उसने अपने आपको अपनी किस्मत पर छोड़ दिया।

उसको ऐसा लग रहा था जैसे वह बारहसिंगा उसको वहाँ से ले कर कहीं भाग रहा हो। आखिर वह उसको एक चट्टान की दीवार के पास तक ले आया और बहुत सँभाल कर उस दरजी को नीचे उतार दिया।

दरजी अपने आपको ज़िन्दा कम और मुर्दा ज़्यादा समझ रहा था। उसको सँभलने में काफी समय लगा। जब वह थोड़ा सँभला तो बारहसिंगे ने जो अभी भी उस दरजी के पास ही खड़ा था उस चट्टान की दीवार में बहुत ज़ोर से अपने सींग मारे।

वहाँ एक दरवाजा था जो उसके सींग मारने से खुल गया। उस दरवाजे में से आग की लपटें मिकलने लगीं। उसके पीछे पीछे धुँआ निकला जिससे वह बारहसिंगा उसकी आँखों से छिप गया।

दरजी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे और कहाँ जाये ताकि वह इस सुनसान जगह को छोड़ कर फिर से आदमियों के बीच पहुँच जाये।

वह जब यह सब सोच ही रहा था कि उस चट्टान में से एक आवाज आयी — "तुम बिना किसी डर के इसके अन्दर घुस जाओ तुम्हारा कुछ बुरा नहीं होगा।"

पहले तो वह कुछ हिचकिचाया पर फिर किसी अनजानी ताकत के सहारे वह उस लोहे के दरवाजे से अन्दर घुस गया। अन्दर एक बहुत बड़ा कमरा था जिसकी छत दीवारें और फर्श सभी चमकदार पौलिश किये हुए चौकोर पत्थर के टुकड़ों के बने हुए थे।

उनमें से हर पत्थर पर कुछ न कुछ खुदा हुआ था जो वह पढ़ नहीं सकता था। उसको सारी चीज़ वहाँ बहुत ही अच्छी लग रही थीं।

पर उस सबको देख कर वह बाहर जाने ही वाला था कि उसने वही आवाज एक बार फिर सुनी — "उस पत्थर पर पैर रखो जो कमरे के बीच में लगा हुआ है। तुम्हारी अच्छी किस्मत तुम्हारा इन्तजार कर रही है।"

अब तक उसकी हिम्मत बढ़ चुकी थी सो उसने उस आवाज की बात मानी और वह कमरे के बीच वाले पत्थर की तरफ चल दिया। जैसे ही उसने उस पत्थर पर पैर रखा तो वह पत्थर नीचे की तरफ धसकने लगा और नीचे की तरफ धसकता ही चला गया।

कुछ दूर जा कर वह पत्थर ठहर गया तो दरजी ने इधर उधर देखा तो वह फिर से उतने ही बड़े कमरे में खड़ा था जितने बड़े कमरे में वह ऊपर खड़ा था। इस कमरे में देखने के लिये और उसकी तारीफ करने के लिये और भी ज़्यादा चीज़ें थीं।

दीवारों में कुछ जगहें बनी हुई थीं जिनमें पारदर्शक शीशे के बड़े बड़े बरतन रखे हुए थे। उनमें या तो रंगीन शराब भरी हुई थी और या फिर नीले रंग की भाप भरी थी।

उस कमरे के फर्श पर दो बड़ी बड़ी शीशे की आलमारियाँ आमने सामने खड़ी थीं। उनको देख कर उसकी उत्सुकता जागी तो वह उनमें से एक आलमारी के पास गया।

उसमें उसने देखा तो उसने देखा कि उसमें तो एक पूरा का पूरा किला खड़ा हुआ है जिसके चारों तरफ फार्म हाउस बने हैं, घुड़साल बनी हैं, अनाजघर बने हैं और भी कई इमारतें बनी हैं।

हर चीज़ बहुत छोटी थी पर बड़ी सँभाल कर और सुन्दर तरीके से चतुर हाथों से बनायी गयी थी। ऐसा लग रहा था जैसे किसी का कोई मौडल रखा हो।

उसकी तो उसके ऊपर से ऑख ही नहीं हट रही थी कि उसी आवाज ने उससे फिर कहा कि वह उस आलमारी के दूसरी तरफ खड़ी आलमारी की तरफ भी देखे।

जब उसने दूसरी आलमारी की तरफ देखा तो वह तो उसकी तारीफ किये बिना न रह सका। उसमें उसने एक बहुत सुन्दर लड़की लेटी हुई देखी।

वह उस आलमारी में ऐसे लेटी हुई थी जैसे सो रही हो। उसके चारों तरफ उसके सफेद बाल लिपटे हुए थे। उसकी ऑखें तो बन्द थीं पर उसकी रंगत की चमक और वह रिबन जो उसकी सॉसों से हिल रहा था साफ बता रहा था कि वह ज़िन्दा थी।

दरजी उसकी सुन्दरता को धड़कते दिल से देखता रहा कि अचानक उस लड़की ने अपनी ऑखें खोलीं तो उस दरजी को देख कर वह खुशी के मारे उठ कर बैठी हो गयी।

वह चिल्लायी — "हे भगवान। अब तो मैं यहॉ से आजाद होने वाली हूॅ। जल्दी करो जल्दी करो। मुझे यहॉ इस जेल से निकालो।

अगर तुम इस शीशे के ताबूत की चटकनी वापस कर दोगे तो मैं यहाँ से आजाद हो जाऊँगी।"

दरजी ने ऐसा ही किया। उस लड़की ने शीशे के ताबूत का ढक्कन उठाया उसमें से बाहर निकली और उस कमरे के एक कोने की तरफ चली गयी। उसने अपने आपको एक बड़े शाल से ढक लिया। फिर वह एक बड़े से पत्थर पर बैठ गयी और उस नौजवान दरजी को अपने पास बुलाया।

उसने उसके होठों को एक दोस्त की तरह चूमा और बोली — "ओ मुझे यहाँ से आजाद करने वाले, दयालु भगवान ने तुमको मेरे दुख दूर करने के लिये ही यहाँ भेजा है। जिस दिन मेरे दुखों का अन्त होगा उसी दिन से मेरी खुशियाँ शुरू होंगीं।

भगवान ने तुम्हीं को मेरा पति चुना है। अब तुम्हारी ज़िन्दगी में खुशियाँ ही खुशियाँ होंगी। मैं तुमको प्यार करूँगी और तुम्हारी ज़िन्दगी दुनियाँ के हर सुख से भर दूँगी। अब तुम यहाँ बैठो और मेरी कहानी सुनो।"

कह कर उसने उसको अपनी कहानी सुनायी — "मैं एक अमीर काउन्ट[19] की बेटी हूँ। मैं जब छोटी ही थी तब मेरे माता पिता चल बसे। उन्होंने अपनी वसीयत में लिखा कि मेरे बड़े भाई ही मेरा लालन पालन करें।

[19] Count – Count (male) or countess (female) is a title in European countries for a noble of varying status, but historically deemed to convey an approximate rank intermediate between the highest and lowest titles of nobility.

हम दोनों भाई बहिन एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। हमारा सोचने का ढंग और हमारे विचार इतने मिलते जुलते थे कि हम दोनों ने यह तय किया कि हम दोनों शादी नहीं करेंगे और जब तक जियेंगे एक साथ रहेंगे।

हमारे घर में लोगों की कमी नहीं थी। हमारे पड़ोसी थे, हमारे दोस्त थे जो अक्सर हमारे पास आते रहते थे और हम भी उनकी अच्छी खातिरदारी करते रहते थे।

ज़िन्दगी ऐसी ही चल रही थी कि एक शाम एक अजनबी हमारे किले में आया और उसको क्योंकि कहीं और आगे जाना नहीं था तो उसने हमारे घर में रात को रहने के लिये शरण माँगी। हमने उसको वहाँ रहने की जगह दे दी।

शाम को खाना खाते समय उसने कई कहानियाँ सुना सुना कर हमारा काफी मनोरंजन किया। मेरे भाई को वह अजनबी इतना अच्छा लगा कि उसने उससे वहाँ दो चार दिन रुकने के लिये कहा। कुछ हिचकिचाहट के साथ वह राजी हो गया।

हम लोग बहुत देर रात तक मेज पर ही बैठे रहे फिर उस अजनबी को हमने उसका सोने का कमरा दिखा दिया। उसके बाद मैं भी अपने कमरे की तरफ जल्दी जल्दी चल दी क्योंकि मैं बहुत थक गयी थी।

मैं कुछ ही देर सोयी थी कि मैं एक बहुत ही धीमा खुशी भरा संगीत सुन कर जाग गयी। मैं खुद यह पता नहीं लगा सकी कि वह

संगीत कहाँ से आ रहा था सो यह पता लगाने के लिये मैं अपनी दासी को बुलाना चाहती थी जो मेरे बराबर वाले कमरे में सोती थी।

पर मेरे आश्चर्य की तो हद ही नहीं रही कि जब मैंने महसूस किया कि किसी अनजानी ताकत ने मेरी बोलती बन्द कर दी थी। मैं बोल ही नहीं पा रही थी।

इसके अलावा मैंने यह भी महसूस किया जैसे कोई पहाड़ मेरी छाती पर रखा था और मैं अपने मुँह से ज़रा सी भी आवाज नहीं निकाल पा रही थी।

इस बीच मैंने अपने कमरे में जल रहे रात वाले लैम्प की रोशनी में उस रात वाले अजनबी को दो दरवाजों में से हो कर अपने कमरे में आते देखा जबकि वे दरवाजे कस कर बन्द थे।

वह मेरे पास आया और बोला कि उसके पास जादुई ताकत है जिससे उसने वह संगीत मुझे जगाने के लिये इस्तेमाल किया। अब वह इन बन्द दरवाजों से हो कर इसलिये वहाँ आया था क्योंकि वह मुझे अपना दिल और हाथ दोनों देना चाहता था।

मैं उसके जादू का सिक्का मान गयी थी सो मैंने सोचा कि मैं मेरे लिये यही अच्छा होगा अगर मैं उसकी बातों कोई जवाब न दूँ। वह वहाँ कुछ देर तक बिना हिले डुले खड़ा रहा। जाहिर है कि वह मेरे हाँ में जवाब का इन्तजार कर रहा था।

पर मैं चुप रही तो उसने गुस्से में कहा कि वह मुझसे इसका बदला लेगा और मेरे घमंड को सजा देगा।

और यह कह कर वह कमरे से बाहर चला गया। मेरी सारी रात बहुत ही बेचैनी से बीती। मैं केवल सुबह ही थोड़ा सा सो सकी।

जब मैं जागी तो यह सब बताने के लिये मैं अपने भाई के पास दौड़ी गयी पर वह मुझे वहाँ नहीं मिला। उसके नौकरों ने बताया कि वह उस अजनबी के साथ सुबह सवेरे ही कहीं चला गया है।

मुझे तुरन्त ही कुछ बुरे होने का एहसास हुआ। मैंने तुरन्त ही कपड़े पहने, अपने घोड़े को तैयार करने के लिये कहा और केवल एक नौकर को साथ ले कर अपने घोड़े पर चढ़ कर तेज़ी से जंगल की तरफ चल दी।

मेरे नौकर के घोड़े की टाँग टूट गयी थी सो उसका घोड़ा गिर पड़ा। घोड़े के गिरने से नौकर भी गिर पड़ा था वह उठ नहीं पाया सो वह मेरे साथ नहीं आ पाया।

मैं नौकर का इन्तजार किये बिना ही आगे चल दी। कुछ मिनटों बाद ही मैंने उस अजनबी को एक सुन्दर बारहसिंगे की रस्सी पकड़े अपनी तरफ आते हुए देखा।

मैंने उससे पूछा कि मेरा भाई कहाँ है और उसके पास यह बारहसिंगा कहाँ से आया। मैंने उस बारहसिंगे की आँखों में आँसू देखे।

बजाय मुझे जवाब देने के वह बहुत ज़ोर से हँसा। उसके इस तरह से हँसने पर मुझको बहुत ज़ोर से गुस्सा आ गया। मैंने अपनी पिस्तौल निकाल ली और उस राक्षस की छाती पर गोली चला दी।

आश्चर्य कि वह गोली उसकी छाती से टकरा कर वापस आ गयी और मेरे घोड़े के सिर में लग गयी। मैं घोड़े से नीचे गिर गयी। उस अजनबी ने कुछ शब्द बड़बड़ाये और उसके बाद ही मैं बेहोश हो गयी। जब मैं होश में आयी तो मैंने अपने आपको इस शीशे के ताबूत में बन्द पाया।

वह जादूगर फिर आया और तब उसने मुझे बताया कि उसने मेरे भाई को बारहसिंगे में बदल दिया है। मेरा किला और उसका सब सामान उसके जादू के असर से बहुत छोटे साइज़ का हो गया था जिसको उसने इस दूसरी आलमारी में बन्द कर दिया।

हमारे सब लोग उसने धुँए में बदल दिये जिनको उसने इन शीशे के बरतनों में बन्द कर दिया।

फिर वह बोला कि अगर मैं उसकी इच्छा के अनुसार काम करूँ तो यह मेरे लिये मेरे पहले की तरह बन जाने में सहायता करेगा। क्योंकि इसमें किसी को कुछ नहीं करना था सिवाय बरतनों को खोलने के और फिर सब कुछ पहले जैसा हो जायेगा।

मैंने पहले की तरह से उसको छोटे से छोटा जवाब दिया।

वह मुझे इस जेल में पड़ा छोड़ कर यहाँ से चला गया। उसके जाने के बाद यहाँ मुझे गहरी नींद आ गयी। इस गहरी नींद में मैंने

कुछ सपने देखे उनमें से सबसे मुख्य सपना यह था कि एक नौजवान आया है और उसने मुझे आजाद करा दिया है।

और आज जब मैंने अपनी आँख खोली तो मैंने तुमको देखा तो मुझको लगा कि मेरे उस सपने के पूरा होने का समय आ गया। अपने सपनों में मैंने जो दूसरी चीज़ें देखी थीं उनको भी पूरा करने में मेरी सहायता करो।

पहला काम तो तुम यह करो कि इस शीशे की आलमारी जिसमें यह किला बन्द है इसको उठा कर उस बड़े से पत्थर पर रख दो। दरजी ने वैसा ही किया। जैसे ही वह आलमारी उस बड़े से पत्थर रखी गयी उस पत्थर ने उस लड़की और दरजी के साथ साथ ऊपर उठना शुरू कर दिया।

वह ऊपर उठ कर उस कमरे की छत से निकल कर ऊपर वाले कमरे में आ गया जहाँ वह दरजी पहली बार घुसा था। अब वे वहाँ से बाहर खुले में आसानी से पहुँच सकते थे।

यहाँ आ कर लड़की ने उस आलमारी का दरवाजा खोला तो उस दरजी को यह सब देखने में कितना अच्छा लगा था जब उसमें से उसने किला, मकान, फार्म हाउस आदि सब निकल निकल कर तेज़ी से बड़े हो हो कर अपने पुराने रूप में आते देखे।

इसके बाद वह लड़की और दरजी फिर उसी गुफा में वापस चले आये जो जमीन के नीचे थी। वहाँ जो और बरतन रखे थे वे दोनों उनको भी उसी पत्थर पर रख कर ऊपर ले गये।

लड़की ने बस उन बरतनों को खोला ही था कि उनमें से नीला धुँआ बाहर निकल गया और ज़िन्दा लोगों में बदल गया। उसने उनमें से अपने नौकरों और अपने लोगों को पहचान लिया।

वह तो और ज़्यादा खुश हो गयी जब उसने अपने भाई को आदमी के रूप में जंगल में से आते देखा। उस अजनबी जादूगर ने इसी को बारहसिंगे के रूप में बदल दिया था और इसी बारहसिंगे ने उस जादूगर को जो बैल के रूप में था मार दिया था।

उसी दिन उस लड़की ने अपने वायदे के मुताबिक उस दरजी से शादी कर ली और फिर वे सब सुख से रहने लगे।

4 सूरज, चॉद और तालिया[20]

सोती हुई सुन्दरी जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि इटली में एक लौर्ड रहा करता था जिसकी एक बेटी थी। उसका नाम उसने तालिया रखा। उसके जन्म पर उसने अपने देश के ज्योतिषियों को बुलवा भेजा ताकि वे उसका भविष्य बता सकें।

वे वहॉ आ कर इकट्ठा हुए, उस बच्ची की जन्म कुंडली बनायी और वे सब आखिर इस नतीजे पर पहुँचे कि उसको अलसी के पौधे की फॉस[21] से बहुत खतरा है। इसलिये उसको अलसी या और दूसरी तरह की रुइयों से बचा कर रखना चाहिये ताकि वह उस खतरे में पड़ ही न सके।

समय निकलता गया और तालिया बड़ी होती गयी। वह अब एक सुन्दर जवान लड़की हो गयी थी। एक दिन वह अपनी खिड़की

---

[20] Sun Moon and Talia – a folktale from Italy, Europe. Taken from the book "Pentameron", by Giambattista Basile. Translated by Richard F Burton. Privately printed in 1893. Day 5, Tale 5. In this book 10 women tell 5 stories each say for 10 days, hence in this book there are 50 stories. This story's English version may be read at http://www.pitt.edu/~dash/type0410.html

[21] Splinter of the flax plant. Flax plant is used in its seed form for its oil and fiber for making cloth (linen). See the picture of flax seeds above.

से बाहर झाँक रही थी कि उसने रास्ते पर जाती एक बुढ़िया देखी जो कुछ कातती जा रही थी।

तालिया ने पहले कभी तकली[22] देखी नहीं थी सो जब वह बुढ़िया उस तकली को घुमाती थी तो उसको उसे घूमते हुए देखने में बहुत अच्छा लग रहा था। उसको आश्चर्य भी हुआ और उत्सुकता भी कि वह चीज़ क्या थी और वह कर क्या रही थी क्योंकि उसने पहले कभी तकली देखी ही नहीं थी।

उसने उस बुढ़िया को अपने पास बुलाया। वह बुढ़िया उसके पास आयी तो उसने उसके हाथ से वह तकली ले ली और उसने खुद ने रुई को उस तकली में लगा कर तकली को घुमाना शुरू कर दिया।

किस्मत की बात कि उस रुई का एक टुकड़ा तालिया के नाखून के नीचे लग गया और वह जमीन पर नीचे गिर गयी और मर गयी। बुढ़िया ने जब यह देखा तो वह बहुत डर गयी और सीढ़ियों से नीचे भागी और फिर भागती ही गयी।

जैसे ही तालिया के बदकिस्मत पिता ने यह सुना तो वह बहुत रोया बहुत रोया। उसने तालिया को बाहर के एक बहुत बड़े मकान

[22] Translated for the word "Spindle" – see its picture above.

में मखमल के एक सिंहासन पर बिठा दिया। उस सिंहासन पर ब्रोकेड[23] की बनी छतरी लगी हुई थी।

अपनी बदकिस्मती की इस याद के बारे में सब कुछ भूल जाने की इच्छा से उसने घर के दरवाजे बन्द कर दिये और वह घर भी हमेशा के लिये छोड़ दिया जिसमें उसके साथ यह दुख भरी घटना घटी थी।

कुछ समय बाद की बात है कि एक राजा शिकार के लिये उधर आ निकला जिस मकान में तालिया बैठी थी।

असल में उस राजकुमार के हाथ से एक फाख्ता चिड़ा उड़ गया था और उड़ कर वह उस मकान की एक खिड़की पर जा कर बैठ गया। उसने उस फाख्ता को काफी बुलाने की कोशिश की पर वह उसके पास नहीं आया।

सो उसने यह सोच कर कि उस मकान में कोई लोग तो रहते होंगे अपने एक आदमी को उस मकान का दरवाजा खटखटाने और फाख्ता लाने के लिये भेजा।

उसने वहाँ जा कर काफी देर तक दरवाजा खटखटाया पर किसी ने दरवाजा ही नहीं खोला। तो राजा ने एक सीढ़ी मँगवायी ताकि वह खुद उस मकान में चढ़ कर उसमें अन्दर पहुँच सके और देख सके कि उसके अन्दर क्या है जिसका दरवाजा ही कोई खोल नहीं रहा है।

[23] Brocade is an expensive cloth woven with golden and silvery threads.

सो वह सीढ़ी लगा कर उस मकान पर चढ़ा और उसके अन्दर घुसा। उसने उस मकान के सारे कमरे देखे सारे कोने देखे पर उसको वहाँ कोई दिखायी ही नहीं दिया। वहाँ किसी भी ज़िन्दा आदमी को न देख कर वह बहुत आश्चर्यचकित हुआ।

आखिर वह उस मकान के एक बड़े कमरे में आया जहाँ तालिया बैठी हुई थी। वह वहाँ बैठी हुई ऐसी लग रही थी जैसे वह किसी के जादू के असर में बैठी हो।

राजा को लगा कि वह सो रही थी सो उसने उसको पुकारा भी पर वह तो बेहोश ही रही कुछ बोली नहीं। वह उसको देख कर ज़ोर से रो पड़ा और उसकी सुन्दरता को ही देखता रहा। उसके शरीर में उसका गरम खून बड़ी तेज़ी से बहता रहा।

उसने तालिया को अपनी बाँहों में उठा लिया और उसको वहाँ पड़े एक पलंग पर ले गया और वहाँ ले जा कर उसे लिटा दिया।

उसको उससे प्यार हो गया था। उसने उसको वहीं पलंग पर लिटा दिया और अपने राज्य लौट गया। वहाँ राज्य में उसको काफी काम लग गया तो वह इस घटना के बारे में सब कुछ भूल गया।

नौ महीने बाद तालिया ने दो खूबसूरत बच्चों को जन्म दिया – एक लड़का और एक लड़की। उसके दोनों ही बच्चे एक कीमती मणि की तरह थे। उनकी देख भाल दो परियाँ कर रही थीं जो उस मकान में उनका पालन पोषण करने के लिये ही आयी थीं।

बच्चों को भूख लगी थी सो उन्होंने अपना मुँह इधर उधर मारना शुरू कर दिया। अचानक उनके मुँह में उनकी माँ का अँगूठा आ गया। उसको उन्होंने इतना चूसा कि उसके अँगूठे में फँसी अलसी की रुई की फाँस निकल कर बाहर आ गयी।

जैसे ही अलसी की रुई की फाँस निकली तालिया जाग गयी जैसे वह किसी बहुत लम्बी नींद से जागी हो। अपने बराबर में दो सुन्दर बच्चों को देख कर उसने उनको अपनी छाती से लगा लिया और उनको अपना दूध पिलाया। वे बच्चे उसको अपनी जान से भी ज़्यादा प्यारे थे।

पर उतने बड़े मकान में अपने आपको अकेला पा कर वह सोचने लगी कि उसको हुआ क्या था। तभी उसने देखा कि वहाँ खाने की मेज लगी हुई है और उसके लिये खाना पीना भी वहाँ लाया रखा था हालाँकि उसको वहाँ कोई दिखायी नहीं दिया।

इस बीच राजा को तालिया की याद आयी तो वह यह कह कर कि वह शिकार के लिये जाना चाहता है उस बड़े मकान में वापस लौटा।

वहाँ उसने देखा कि तालिया तो जाग गयी थी और वहाँ दो बहुत सुन्दर बच्चे भी थे। उन सबको देख कर वह बहुत खुश हुआ और उसने तालिया को बताया कि वह कौन था और वह उसको कैसे मिला और उसके साथ क्या हुआ था।

जब तालिया ने यह सब सुना तो उन दोनों का प्रेम और गहरा हो गया। राजा वहाँ कुछ दिन रहा। उसके बाद उसने उससे विदा ली और फिर जल्दी ही वापस आने का और उसको अपने महल ले जाने का वायदा करके अपने घर चला गया।

वह अपने राज्य चला गया पर वहाँ उसको फिर से समय नहीं मिला पर उसके मुँह पर तालिया और सूरज और चन्दा जो उसके बच्चों के नाम थे के ही नाम थे। जब भी उसको ज़रा सा भी समय मिलता तो बस वह उन्हीं को याद करता रहता।

राजा की पत्नी को शक हुआ कि इस बार राजा के शिकार करते समय में कुछ न कुछ गड़बड़ जरूर थी। वह तालिया, सूरज और चन्दा का ही नाम लेता रहता था। यह सुन कर वह बहुत गुस्सा हो गयी।

उसने सेक्रेटरी को बुलाया और उससे कहा — "सुनो मेरे बेटे। तुम दो चट्टानों के बीच में खड़े हो। अगर तुम मुझे यह बताओगे कि तुम्हारे मालिक और मेरे पति किस दूसरी स्त्री से प्यार करते हैं तो मैं तुमको बहुत सारा खजाना दूँगी।

और अगर तुम मुझसे सच्चाई छिपाओगे तो देख लो तुम कहीं दिखायी नहीं दोगे – न तो ज़िन्दा न मुर्दा।"

यह सुन कर वह बेचारा सेक्रेटरी तो बहुत डर गया। लालच और डर ने उसको सारी इज्ज़त और न्याय की तरफ से अन्धा कर दिया। उसने पता लगा कर रानी को सब सच सच बता दिया।

रानी समझ गयी कि मामला क्या था सो उसने सेक्रेटरी को राजा के नाम से तालिया के पास भेजा कि वह बच्चों को राजा के पास भेज दे क्योंकि वह उनको देखना चाहता था। तालिया ने बड़ी खुशी से अपने दोनों बच्चों को राजा के पास भेज दिया।

रानी ने बड़ी बेरहमी से उन मासूम बच्चों को शाही रसोइये को मारने के लिये दे दिया। उसने उससे कहा कि वह उनके माँस से उसके नीच पति के लिये बहुत स्वाददार खाना बनाये।

पर रसोइया बहुत ही नरम दिल वाला आदमी था। जब उसने उन सुनहरी सेब जैसे प्यारे बच्चों को देखा तो उसको उनके ऊपर दया आ गयी। वह उनको अपने घर ले गया और उनको अपनी पत्नी को दे दिया और कहा कि वह उनको छिपा कर रखे।

उनकी जगह पर उसने दो बकरों की बहुत सारी स्वादिष्ट चीज़ें तैयार कर दीं। जब राजा आया तो रानी ने वह खाना बड़ी खुशी से राजा के लिये परसा।

राजा ने भी उस खाने को बड़ी खुशी से खाया। वह बोला — "यह खाना तो आज बहुत ही स्वादिष्ट है।" वह जितनी बार भी खाने की तारीफ करता रहा रानी हर बार यही कहती रही — "खाओ खाओ तुम तो अपना ही खाना खा रहे हो।"

दो तीन बार तो राजा ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया पर जब रानी ने यह कई बार कहा तो वह बोला — "मुझे मालूम है कि मैं

अपना ही खाना खा रहा हूँ क्योंकि तुम तो इस घर में कुछ ले कर आयी नहीं हो।"

यह कह कर वह गुस्से में आ कर उठ गया और अकेले रहने के लिये और अपने गुस्से को शान्त करने के लिये अपने महल से कुछ दूरी पर बने एक मकान में चला गया।

इस बीच रानी अपने इस नीच काम से अभी सन्तुष्ट नहीं थी। उसने सेक्रेटरी को फिर बुलाया और उसको तालिया को वहाँ यह कह कर लाने के लिये कहा कि अब राजा उसको देखना चाहता है और उसका इन्तजार कर रहा है।

तालिया यह सुन कर बहुत खुश हुई। वह तुरन्त ही उस सेक्रेटरी के साथ चल दी। वह यह सोच कर ही उसके साथ जा रही थी कि वह तो अपने राजा का हुकुम मान रही थी।

उसकी खुद की भी राजा से मिलने की बहुत इच्छा हो रही थी पर उसको यह नहीं पता था कि उसके लिये आगे क्या इन्तजार कर रहा था।

महल जा कर वह रानी से मिली तो उसने देखा कि उसका चेहरा तो गुस्से के मारे जला जा रहा है। रानी ने तालिया का स्वागत किया — "आओ आओ। तुम तो बहुत ही अच्छी हो। ओ नीच, तो तुम मेरे पति के साथ आनन्द मना रही हो।

तुम तो कूड़ा हो कूड़ा जिसने मेरा सिर घुमा दिया है। अपने तौर तरीके बदल लो क्योंकि तुम इस समय परगेटोरी[24] में खड़ी हो जहाँ मैं तुमको तुमने मेरे साथ जो कुछ भी बुरा किया है उसका बदला दूँगी।"

यह सुन कर तालिया ने उससे माफी माँगी और कहा कि इस सब में उसकी कोई गलती नहीं है क्योंकि राजा यानी उसके पति ने उसके अपने राज्य पर अधिकार कर लिया था जब वह सो रही थी। इसमें उसका कोई दोष नहीं।

पर रानी उसकी कोई बात सुनने वाली नहीं थी। उसने आँगन में एक बहुत बड़ी आग जलवायी और हुकुम दिया कि तालिया को उस आग में डाल दिया जाये।

तालिया ने देखा कि यह तो सारा मामला उलटा ही पड़ रहा है तो वह रानी के सामने झुक कर बैठ गयी और उससे प्रार्थना की कि वह उसको आग में फेंकने से पहले उसको अपने कपड़े उतारने की इजाज़त दे दे।

रानी ने उस दुखी स्त्री के ऊपर दया दिखाने के लिये नहीं बल्कि इसलिये कि इस तरह से वे कपड़े भी उसके हो जायेंगे उसको अपने कपड़े उतारने की इजाज़त दे दी। तालिया के कपड़े सोने के तारों और मोतियों से कढ़े हुए थे।

---

[24] Purgatory – According to Catholic Church doctrine, Purgatory is an intermediate state after physical death in which those destined for Heaven undergo purification, so as to achieve the holiness necessary to enter the joy of Heaven.

सो तालिया ने अपने कपड़े उतारने शुरू कर दिये। अपने हर कपड़े को उतारने के साथ ही वह ज़ोर से चिल्लाती। पहले उसने अपना ऊपर का गाउन निकाला, फिर स्कर्ट निकाली और फिर ब्लाउज़ निकाला।

अब जब वह अपना आखिरी कपड़ा उतार रही थी तो उसने एक बहुत ज़ोर की चीख मारी – अपनी पहली चीखों से भी बहुत तेज़ चीख। फिर लोग उसको जला कर राख करने के लिये आग की तरफ घसीट कर ले जाने लगे।

इतने में राजा वहाँ आ गया और यह दृश्य देख कर उसने पूछा कि यह सब वहाँ क्या हो रहा था।

उसने अपने बच्चों के बारे में पूछा तो उसकी पत्नी ने उसकी नीचता बताते हुए उससे कहा कि उसने उन दोनों को मरवा दिया और उनका माँस उसी को खाने में परस दिया।

जब उस अभागे राजा ने यह सुना तो वह बहुत ही दुखी हो गया और बोला — "ओह मैं तो अपने बकरों के लिये भेड़िया बन गया। मेरी नसों में बहते खून ने अपने ही खून के फव्वारे को क्यों नहीं पहचाना? तूने यह नीच काम क्यों किया ओ डायन? जा चली जा यहाँ से।"

यह कहते हुए उसने नौकरों को हुकुम दिया कि वह रानी और सेक्रेटरी दोनों को ही उस आग में डाल दें जो रानी ने तालिया के लिये जलवायी थी।

वह रसोइये के साथ भी यही करने जा रहा था क्योंकि उसको विश्वास था कि उसी ने उसके बच्चों को मारा होगा कि वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और बोला — "मालिक सचमुच में ऐसे लोगों के लिये यह आग का ढेर ही ठीक है और उनको कोई सहायता भी नहीं मिलनी चाहिये सिवाय पीछे से भाले के।

और उनके लिये कोई और मनोरंजन भी नहीं होना चाहिये सिवाय आग में इधर उधर अलटे पलटे जाने के।

मुझे आपसे कुछ और नहीं चाहिये मालिक सिवाय अपनी राख के, रानी की राख के साथ। यह नीच रानी जो आपके उन बच्चों को मारना चाहती थी जो आपका ही शरीर थे। पर मेरे आपके बच्चों को बचाने का यह इनाम तो नहीं हो सकता है।"

यह सुन कर राजा आश्चर्य में पड़ गया। उसको लगा कि वह कहीं सपना तो नहीं देख रहा। उसको अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ।

वह बोला — "अगर यह सच है कि तुमने मेरे बच्चों को बचाया है तो तुम मेरा विश्वास करो तो मैं तुमको यहाँ की गन्दी जगह से निकाल कर किसी अच्छी सी जगह रखूँगा। और तुमको इतना इनाम दूँगा कि तुम अपने आपको दुनियाँ का बहुत खुशनसीब आदमी समझोगे।"

राजा जब यह सब कह रहा था तो रसोइये की पत्नी अपने पति की जरूरत समझ कर राजा के दोनों बच्चों सूरज और चन्दा को वहाँ ले आयी।

राजा तो फिर अपनी पत्नी और बच्चों के साथ खेलता थकता नहीं था। उसने रसोइये को बहुत इनाम दिया।

उसने उसको कुलीन घरों की देख भाल करने वाला बना दिया। उसने खुद ने तालिया से शादी कर ली और फिर वे दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

5 सोती हुई सुन्दरी और उसके बच्चे[25]

सोती हुई सुन्दरी जैसी यह कहानी भी यूरोप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक राजा और रानी थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। इस बात से केवल वे ही नहीं बल्कि उनका सारा दरबार भी दुखी रहता था। ऐसा लगता था जैसे वे सब किसी का अफसोस मना रहे हों।

रानी बेचारी दिन रात प्रार्थना करती पर वह नहीं जानती थी कि वह किस सन्त की प्रार्थना करे ताकि उसको एक बच्चा हो जाये। वह सारे सन्तों की प्रार्थना कर चुकी थी पर किसी ने कोई जवाब नहीं दिया था।

एक दिन उसने यह प्रार्थना की — "ओ वरदान दी गयी माँ[26], मेहरबानी करके मुझे एक लड़की ही दे दो चाहे वह तकुए[27] की नोक अपनी उँगली में चुभ जाने से 15 साल की उम्र में ही मर जाये।"

---

[25] Sleeping Beauty and Her Children (Story No 139) – a folktale from Italy from its Calabria area. Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[26] Translated for the words "O Blessed Mother"
[27] Translated for the word "Spindle". It is used to spin thread – see its picture above.

बस फिर क्या था उसको बच्चे की आशा हो गयी और समय आने पर उसके एक बहुत सुन्दर बेटी पैदा हुई। उन्होंने उसका बहुत शानदार बैपटिस्म[28] किया और उसका नाम कैरोल[29] रख दिया।

इस बच्ची के पैदा होने से राजा और रानी बहुत खुश हुए। ऐसा लगता था कि बस धरती पर वही खुश थे और दूसरा कोई नहीं।

समय बीतते कितनी देर लगती है। **15** साल भी बस ऐसे ही निकल गये। जब कैरोल **15** साल की होने को आयी तो एक दिन रानी को प्रार्थना करते समय अपनी पुरानी प्रार्थना याद आयी तो उसने वह सब राजा से कहा तो राजा तो बहुत सोच में डूब गया।

लेकिन बाद में फिर वह सँभला और उसने अपने राज्य में से सारे तकुए नष्ट करने का हुकुम दे दिया। उसने कहा कि जिस किसी के घर में भी तकुआ पाया गया उसका सिर उससे बिना कुछ पूछे ही धड़ से अलग कर दिया जायेगा।

इस घोषणा से जो लोग सूत कात कर अपना गुजारा करते थे राजा के पास गये और अपनी परेशानी उसको सुनायी तो राजा बोला कि इस बात की उनको चिन्ता करने की जरूरत नहीं है क्योंकि उनके परिवार का पालन पोषण वह खुद करेगा।

[28] Baptism or Christening - the ceremony of baptism, especially as accompanied by the giving of a name to a child.
[29] Carol – the name of the girl.

पर राजा को अपनी इस घोषणा से भी सन्तुष्टि नहीं हुई तो उसने अपनी बेटी को उसकी सुरक्षा के लिये उसके अपने कमरे में बन्द कर दिया और अपने महल में सबको कह दिया कि उससे कोई न मिले। पर होनी को कौन रोक सकता है।

अब कैरोल अपने कमरे में अकेली रह गयी सो वह अपने कमरे की खिड़की से बाहर देखती रहती। उसके कमरे की खिड़की की तरफ से सड़क के उस पार एक बुढ़िया रहती थी।

सब जानते हैं कि बूढ़े लोग कैसे होते हैं। वे अपने में इतने खोये रहते हैं कि वे अपने बारे में सोचने के अलावा किसी और के बारे में सोचते ही नहीं।

इस बुढ़िया के पास एक तकुआ था और रुई भी। जब भी उसका मन करता वह उस तकुए से अपना कुछ सूत कात लेती थी। वह अक्सर खिड़की के पास बैठ कर सूत कातती थी क्योंकि खिड़की के पास धूप और रोशनी दोनों आती थीं।

एक बार राजा की बेटी ने उसको सूत कातते देख लिया। उसने इससे पहले कभी किसी के हाथ इस तरीके से हिलते नहीं देखे थे सो उसने जब बुढ़िया के हाथों को उस अजीब तरीके से हिलते देखा तो उसकी उत्सुकता उसकी तरफ बढ़ती गयी।

जब उसकी उत्सुकता हद पार कर गयी तो एक दिन उसने उस बुढ़िया को पुकार कर पूछा — "ओ मैम, यह आप क्या कर रही हैं?"

बुढ़िया बोली — "मैं थोड़ी सी रुई कात रही हूँ बेटी, पर तुम किसी से कहना नहीं।"

"क्या मैं भी ऐसी रुई से थोड़ा सा सूत कात सकती हूँ?"

"हाँ हाँ बेटी क्यों नहीं। पर बस तुम भी छिपा कर ही कातना। ऐसा न हो कि कोई तुमको सूत कातते देख ले।"

कैरोल बोली — "ठीक है मैम, मैं किसी से नहीं कहूँगी और मैं सूत भी छिप कर ही कातूँगी। मैं एक रस्सी के सहारे एक टोकरी नीचे लटकाती हूँ। आप उस टोकरी में एक तकुआ और थोड़ी सी रुई रख कर ऊपर भेज दें। आपको उस टोकरी में अपने लिये एक भेंट भी मिलेगी।"

यह कह कर कैरोल ने रस्सी के सहारे एक टोकरी नीचे गली में लटका दी। उसमें पैसों से भरा हुआ एक बटुआ था। बुढ़िया ने उसमें बटुआ निकाल लिया और एक तकुआ और कुछ रुई रख दी। कैरोल ने उस टोकरी को ऊपर खींच लिया।

कैरोल तो उस टोकरी को देख कर बहुत खुश हो गयी। उसने तुरन्त ही उस तकुए से रुई सूत कातने की कोशिश भी की।

उसने उससे एक बार धागा काता, दूसरी बार काता, पर जब तीसरी बार काता तो वह तकुआ उसके हाथ से फिसल गया और उसके सीधे हाथ के अँगूठे के नाखून के नीचे चुभ गया। लड़की तुरन्त ही फर्श पर गिर गयी और मर गयी।

जब राजा अपनी बेटी को देखने आया और उसके कमरे का दरवाजा खटखटाया तो न तो किसी ने दरवाजा खोला और न ही किसी ने अन्दर से कोई जवाब दिया।

राजा ने देखा कि दरवाजा तो अन्दर से बन्द था। असल में राजकुमारी ने अपने कमरे का दरवाजा इसलिये बन्द कर लिया था ताकि उसको सूत कातते हुए कोई देख न ले।

राजा ने दरवाजा तुड़वाया तो देखा कि उसकी प्यारी बेटी तो जमीन पर मरी पड़ी है और उसके पास ही एक तकुआ पड़ा है। यह देख कर राजा ने अपना सिर पीट लिया।

राजा और रानी दोनों ही अपनी एकलौती बेटी को मरा देख कर इतने दुखी हुए कि उनको तसल्ली देने के लिये किसी के पास शब्द ही नहीं थे।

पर वह लड़की मरने के बाद भी उतनी ही सुन्दर लग रही थी जितनी वह पहले थी। वह ऐसी लग रही थी जैसे सो रही हो।

उसका शरीर भी ठंडा नहीं पड़ा था। उसकी तो जैसे बस साँस ही नहीं चल रही थी और उसका दिल भी नहीं धड़क रहा था। जैसे किसी ने उसके ऊपर जादू डाल दिया हो।

राजा और रानी ने कैरोल को उठा कर उसके बिस्तर पर लिटा दिया। हफ्तों तक वे उसके बिस्तर के पास इसी उम्मीद में बैठे रहे कि शायद वह आज ज़िन्दा हो जाये, शायद वह आज ज़िन्दा हो जाये। पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

उनको तो असल में यह विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उनकी बेटी मर चुकी थी इसलिये वे उसको दफ़ना भी नहीं रहे थे।

फिर उन्होंने एक पहाड़ की चोटी पर एक छोटा सा किला बनवाया जिसमें कोई दरवाजा नहीं था। बस केवल एक खिड़की थी, और वह भी जमीन की सतह से बहुत ऊपर।

उस किले के अन्दर उन्होंने एक बिस्तर पर अपनी बेटी को सुला दिया। उसका पलंग काफी चौड़ा था और उस पर छत लगी हुई थी।

उस छत पर सारे में सोने के फूल कढ़े हुए थे। उन्होंने उसको दुलहिन की पोशाक पहना दी थी। उस पोशाक की सात स्कर्ट थीं जिनमें चाँदी के घुँघुरू लगे हुए थे।

अपनी बेटी के गुलाब जैसे ताजा चेहरे को आखिरी बार चूम कर राजा और रानी उस किले के दरवाजे से बाहर आ गये और उनके बाहर निकलते के बाद वह दरवाजा चिनवा कर बन्द करवा दिया गया।

इस घटना के कई दिन बाद एक नौजवान राजकुमार शिकार खेलने के लिये निकला तो इस किले की तरफ आ निकला। उसने उस किले में अन्दर जाने की सोचा तो उसको उसका कोई दरवाजा ही दिखायी नहीं दिया।

उस किले को देख कर उसने सोचा कि यह क्या हो सकता है। क्योंकि यह किला दिखायी तो देता है पर इसमें कोई दरवाजा नहीं है। केवल एक खिड़की? यह है क्या?

उसके कुत्ते भौंक रहे थे और उस किले के चारों तरफ दौड़ रहे थे। वह उनको चुप कराना चाह रहा था पर उनका भौंकना ही नहीं रुक रहा था।

उधर राजकुमार की उत्सुकता यह जानने की बढ़ती ही जा रही थी कि उस किले के अन्दर क्या है जिसका दरवाजा ही नहीं है। और जब दरवाजा ही नहीं है तो वह उसके अन्दर जाये कैसे।

जब वह कुछ नहीं कर सका तो उस समय तो वह वहाँ से वापस लौट गया पर अगले दिन वह एक रस्सी और एक सीढ़ी ले कर लौटा। उसने खिड़की के सहारे सीढ़ी रखी और उस पर चढ़ गया।

फिर वहाँ से खिड़की पर रस्सी फेंकी। उस रस्सी के सहारे वह किसी तरह उस खिड़की से हो कर उस किले के अन्दर चला गया।

वहाँ उसने एक बहुत सुन्दर लड़की को एक बड़े से पलंग पर लेटे देखा। उसका चेहरा गुलाब के फूल की तरह से खिला हुआ और ताजा दिखायी दे रहा था। उसके चारों तरफ फूल रखे हुए थे और वह बड़े आराम से सो रही थी। उसको देख कर तो उसको चक्कर ही आ गया।

उसने अपने आपको उस पलंग को पकड़ कर सँभाला। फिर हाथ बढ़ा कर उस लड़की के माथे को छुआ। उस लड़की का माथा अभी भी गरम था। उसने सोचा तो यह अभी मरी नहीं है।

वह उसको देखे जा रहा था देखे जा रहा था। उसकी आँखें उसके चेहरे से हट ही नहीं पा रही थीं। वह वहाँ रात होने तक इसी उम्मीद में बैठा रहा कि शायद वह अब जागे अब जागे पर वह नहीं जागी।

अगले दिन वह फिर वापस आया, उसके अगले दिन भी आया है और इसके बाद तो फिर वह उससे एक घंटा भी अलग रहने की नहीं सोच सकता था। उसने उसको कई बार चूमा पर फिर भी वह होश में नहीं आयी।

वह अब उससे प्यार करने लगा था। दिन पर दिन राजकुमार दुबला होता जा रहा था और रानी माँ की समझ में नहीं आ रहा था कि उसके बेटे को क्या हो रहा था और उसका बेटा सारा सारा दिन घर से बाहर क्यों रहता था। यह उसकी सौतेली माँ थी।

उधर उस राजकुमार का प्यार उस लड़की के लिये इतना ज़्यादा बढ़ गया था कि उस लड़की ने कुछ महीनों के बाद जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया – एक लड़का और एक लड़की। वे दोनों बच्चे भी इतने सुन्दर थे कि किसी ने इतने सुन्दर बच्चे कहीं देखे नहीं होंगे।

बच्चे भूखे थे तो उनको दूध कौन पिलाता जबकि उनकी माँ बिस्तर पर एक मरे हुए के समान पड़ी हुई थी। वे रो रहे थे पर उनकी माँ को तो उनका रोना ही सुनायी नहीं पड़ रहा था।

बच्चों के मुँह खुले हुए थे और वे कुछ खाना चाहते थे। उनके मुँह इधर उधर कुछ ढूँढ रहे थे कि उनके मुँह में उनकी माँ का अँगूठा आ गया तो वे उसी को चूसने लगे।

उसका अँगूठा चूसते चूसते राजकुमारी के नाखून के नीचे जो तकुए का टुकड़ा घुस गया था वह बाहर निकल गया और वह जाग गयी। उसने अपनी आँखें मलते हुए कहा — "ओह, मैं कितना सो गयी?"

फिर इधर उधर देख कर बोली — "पर मैं हूँ कहाँ? क्या किसी मीनार में? और ये दो बच्चे कौन है?"

उसकी उलझनें बढ़ती जा रही थीं कि इतने में राजकुमार खिड़की से कूद कर अन्दर आ गया। उसको देख कर तो वह और ज़्यादा चौंक गयी। उसने उससे पूछा — "तुम कौन हो? और तुमको मुझसे क्या चाहिये?"

"ओह तुम ज़िन्दा हो गयीं? मुझसे बात करो प्रिये।"

उनका शुरू का आश्चर्य खत्म हुआ तो वे आपस में बात करने लगे। दोनों ने एक दूसरे के माता पिता और देश के बारे में जाना,

खुश हुए और पति पत्नी तरह से गले लगे। उन्होंने अपने बेटे का नाम सूरज रखा और बेटी का नाम चन्दा रखा।

उसने फिर राजकुमारी से कहा कि अभी वह चलता है लेकिन वायदा किया कि वह उसके लिये बहुत सारी बढ़िया बढ़िया भेंटें ले कर और शादी की तैयारियाँ करके जल्दी ही लौटेगा। और यह कह कर राजकुमार अपने घर लौट गया।

पर वह लड़की तो लगता है कि जैसे किसी बुरे समय में पैदा हुई थी। जैसे ही राजकुमार अपने घर पहुँचा वह बीमार पड़ गया। उसकी बीमारी इतनी ज़्यादा बढ़ गयी कि उसकी भूख जाती रही और वह बेहोश सा हो गया। वह बस यही कहता रहा —

ओ सूरज, ओ चन्दा, ओ कैरोल, काश तुम मेरे साथ खाना खा सकते।

यह सुन कर उसकी माँ को लगा कि किसी ने उसके बेटे पर जादू कर दिया है।

उसने अपने कुछ लोगों को उस जंगल में यह पता करने के लिये भेजा कि उसका बेटा रोज कहाँ जाया करता था तो उसको पता चला कि वहाँ केवल एक अकेला किला था जिसमें एक नौजवान लड़की रहती थी और उसका बेटा उसी के प्यार में पागल था। उससे उसके दो बच्चे भी थे।

यह सब जान कर रानी माँ को उस लड़की से नफरत हो गयी कि वह लड़की किस तरह की थी जिसने उसके बेटे पर ऐसा जादू

कर दिया था। फिर भी उसने अपने दो आदमी यह कह कर सूरज को लाने के लिये उस किले में भेजे कि राजकुमार उसको देखना चाहता था।

हालाँकि कैरोल अपने बेटे को उनको देना नहीं चाहती थी पर उसके पास और कोई चारा नहीं था सो रोते हुए उसने सूरज को उन सिपाहियों को दे दिया।

सिपाही सूरज को ले कर महल आ गये जहाँ रानी माँ उनका इन्तजार कर रही थी। वह बच्चे को रसोइये के पास ले गयी और उसको राजा के लिये भूनने के लिये कहा।

पर वह रसोइया बहुत अच्छा आदमी था। उसका दिल उस नन्हे से बच्चे को मारने का नहीं किया। उसने सूरज को ले जा कर अपनी पत्नी को दे दिया। उसकी पत्नी ने उसको छिपा कर रख लिया और उसको अपने बच्चे की तरह पालने लगी।

उधर रसोइये ने बच्चे की जगह एक बकरे को भूना और राजा के पास ले गया। खाना देख कर राजा ने पहले की तरह से एक लम्बी साँस ली और बोला —

ओ सूरज, ओ चन्दा, ओ कैरोल, काश तुम मेरे साथ खाना खा सकते।

रानी माँ ने वह बकरे वाली प्लेट उठा ली और उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोली — "लो बेटा, तुम अपने को ही खाओ।"

राजकुमार ने जब ये शब्द सुने और रानी माँ के चहरे की तरफ देखा तो उसकी तो यह समझ में ही नहीं आया कि वह कह क्या रही थी पर फिर वह अपना खाना खाने लगा।

अगले दिन उस बेरहम औरत ने उन्हीं सिपाहियों को बच्ची को लाने के लिये किले वापस भेजा तो कैरोल को उस बच्ची को भी उनको देना पड़ा।

रानी माँ ने इस बार भी उस बच्ची को रसोइये को भूनने के लिये दे दिया और रसोइये ने इस बार भी उस बच्ची को अपनी पत्नी को दे कर बचा लिया।

उसकी पत्नी ने उस बच्ची को भी अपने पास रख लिया और वह उसको भी पालने लगी। और रसोइये ने एक और बकरा भून कर राजा के खाने में परोस दिया।

राजकुमार की माँ ने फिर कहा — "लो बेटा तुम अपने को ही खाओ।"

अबकी बार राजकुमार ने फुसफुसा कर रानी माँ से पूछा कि वह जो कुछ कह रही थी उसका क्या मतलब था पर रानी माँ चुप रही।

तीसरे दिन रानी माँ ने उन सिपाहियों को उस लड़की को लाने के लिये भेजा तो वह बेचारी लड़की तो डर के मारे मर सी ही गयी। पर वह क्या करती वह उन सिपाहियों के साथ चल दी।

उसने अभी भी अपनी पुरानी शादी वाली पोशाक ही पहन रखी थी जिसमें सात स्कर्ट थे जिनमें चाँदी के घुँघुरू लगे हुए थे।

रानी माँ उसका सीढ़ियों पर ही इन्तजार कर रही थी। जैसे ही वह लड़की उसके पास आयी उसने उसके बाँये और दाँये दोनों गालों पर थप्पड़ मारने शुरू कर दिये।

लड़की ने भोलेपन से पूछा — "आप मुझे क्यों मार रहीं हैं?"

रानी माँ गुस्से से बोली — "क्यों मार रही हूँ? तूने मेरे बेटे के ऊपर जादू क्यों किया ओ बदसूरत जादूगरनी? और अब वह मर रहा है। पर तुझको पता है कि अब तेरा क्या होने वाला है?"

यह कह कर उसने उबलते पानी के बरतन की तरफ इशारा किया।

यह सब राजा को कुछ सुनायी नहीं दे रहा था क्योंकि राजा की माँ ने उसके कमरे में उसके मन बहलाव के लिये कुछ गाने बजाने वालों को गाने बजाने के लिये बिठा रखा था। वे गा बजा रहे थे तो उनकी आवाजें सारे महल में गूँज रही थीं और वह कुछ नहीं सुन सकता था।

असल में यह सब डाक्टर की सलाह से हो रहा था ताकि वह खुश रह सके।

उस पानी के बरतन को देख कर तो वह लड़की इतनी डर गयी कि उसको लगा कि बस अब तो वह मर ही जायेगी।

रानी माँ बोली — "अपनी स्कर्ट उतारो फिर मैं तुमको इस बरतन में फेंकती हूँ।"

कॉपते हुए उस लड़की ने रानी माँ की बात मानी और अपनी पहली स्कर्ट उतारी। उस स्कर्ट को उतारने में उसके उस स्कर्ट में लगे घुँघुरू बज उठे।

राजकुमार को उन घुँघुरुओं के बजने की आवाज साफ साफ सुनायी दी तो उसको लगा कि यह आवाज तो उसने कहीं सुनी है।

उसने अपनी ऑख खोली पर तभी बाजे वालों ने कुछ ज़ोर से ढोल बजाये तो उसको लगा कि शायद उसने ठीक से नहीं सुना।

फिर उस लड़की ने अपनी दूसरी स्कर्ट उतारी। उस स्कर्ट के घुँघुरू और ज़ोर से बजे। यह आवाज भी राजकुमार ने सुनी।

उसने फिर अपना सिर उठाया क्योंकि अबकी बार उसको यकीन हो गया था कि यह आवाज तो उसकी कैरोल की स्कर्ट के घुँघुरुओं की आवाज थी। पर उसी समय बड़े मँजीरों की आवाज ज़ोर से बजने लगी तो वह एक बार फिर शक में पड़ गया।

उसको फिर लगा कि उसने घुँघ़रुओं की आवाज सुनी। इस बार वह आवाज और ज़्यादा साफ थी। फिर भी उसको सुनने के लिये उसे अपने कानों पर बहुत ज़ोर डालना पड़ रहा था।

इस तरह वह लड़की अपनी स्कर्ट पर स्कर्ट उतारती रही और उसके हर स्कर्ट के घुँघुरुओं की आवाज राजकुमार के कानों में पड़ती रही – हर बार तेज़ और और तेज़ जब तक कि पूरे महल में उनकी आवाज गूँज नहीं गयी।

राजकुमार एकदम से चिल्लाया — "कैरोल।" और अपने बिस्तर से उठ कर भागा। उसने कई दिनों से ठीक से खाना नहीं खाया था सो वह कमजोर था और काँप रहा था।

वह सीढ़ियों से नीचे उतरा तो उसने देखा कि उसकी पत्नी तो गरम उबलते हुए पानी में फेंकी जाने वाली हो रही है।

वह चिल्लाया — "रुको, यह तुम लोग क्या कर रहे हो?"

उसने अपनी तलवार उठायी और उसे रानी की तरफ करके कहा — "अपने पापों को स्वीकार करो ओ माँ।"

जब उसको यह पता चला कि उसके बच्चों को उसी का खाना बना कर उसकी खाने की मेज पर रखा गया था तब तो वह दुख से बिल्कुल पागल सा हो गया और रसोइये को मारने दौड़ा।

पर जब रसोइये ने उसको बताया कि उसके बच्चे बिल्कुल सुरक्षित थे। तो यह सुन कर उसको इतनी खुशी हुई कि वह हँस पड़ा और खुशी से नाचने लगा।

रानी माँ को उस गरम पानी के बरतन में फेंक दिया गया। रसोइये को बच्चों को बचाने के लिये भारी इनाम मिला। राजा कैरोल, सूरज और चन्दा के साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी राज्य का सुख भोगता रहा।

6 जंगल में सोती हुई सुन्दरी[30]

सोती हुई सुन्दरी जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक राजा और एक रानी थे। वे बहुत दुखी रहते थे क्योंकि उनके कोई बच्चा नहीं था। वे सारे समुद्रों में घूमे, उन्होंने बहुत सारी मन्नतें माँगीं, तीर्थ यात्राऐं कीं, और भी बहुत सारे तरीके किये पर कुछ फायदा नहीं हुआ।

आखिरकार रानी को एक बेटी हुई। उन्होंने उसकी बहुत सुन्दर किस्टिनिंग रस्म[31] की। इस रस्म में उस राजकुमारी की गौडमदर[32] वे सब परियाँ थी जो भी उस राजा के राज्य में रहती थीं। उसके राज्य में सात परियाँ रहती थीं।

राजा ने उन सब परियों को इस रस्म में बुलाया ताकि वे परियाँ उनकी बच्ची को भेंट दे सकें जैसा कि उन दिनों परियों में रिवाज था। और इस तरह से उनकी बेटी को बहुत सारे सुख और आराम मिल जायेंगे।

---

[30] Sleeping Beauty in the Wood – a folktale from France, Europe. Taken from "A Blue Fairy Book", by Andrew Lang. 5th ed. 1891. Its English version by DL Ashliman may be read at http://www.pitt.edu/~dash/type0410.html
Source - This verson is written by Charles Perrault

[31] Christening ceremony – a Christian ceremony where the child officially becomes Christian. In this ceremony either the child is immersed in water, or water is sprinkled over his/her head, water is poured over him/her.

[32] A Godmother is a female Godparent in the Christian tradition. A Godmother may also refer to: a female arranged to be legal guardian of a child if an untimely demise is met by the parents

क्रिस्टिनिंग की रस्म पूरी होने के बाद सब लोग राजा के महल लौटे। वहाँ परियों के लिये एक बहुत बड़ी दावत की तैयारी की गयी।

उन सबके सामने एक एक सोने का बक्सा रखा गया जिसमें बहुत सारा सोना भरा हुआ था। उनके सामने खालिस सोने के बरतन रखे गये – सोने की प्लेट, प्याले, चम्मचें, काँटे जिनमें लाल और हीरे जड़े हुए थे।

पर जब वे सब खाने की मेज पर खाना खाने के लिये बैठी हुई थीं तो राजा ने देखा कि एक बूढ़ी परी उनकी तरफ चली आ रही है जिसको राजा ने नहीं बुलाया था क्योंकि 50 साल हो गये थे और उसका कुछ अता पता ही नहीं था।

क्योंकि वह एक मीनार जहाँ वह रहती थी वहाँ से बाहर थी और लोगों का विश्वास था कि वह या तो मर चुकी है या फिर किसी ने उसके ऊपर भी जादू डाल दिया है।

पर उसको देखते ही राजा ने उसके लिये भी मेज पर खाने का एक सैट लगवाया पर वह उसके लिये सोने के बक्से का इन्तजाम नहीं कर सका क्योंकि उसने वे खास सात बक्से उन सात परियों के लिये ही बनवाये थे जिनको उसने बुलाया था।

यह देख कर बूढ़ी परी को थोड़ा गुस्सा आ गया और उसने मुँह ही मुँह में कुछ धमकियाँ बुड़बुड़ायीं। एक जवान परी ने जो उसके

पास ही बैठी थी उसकी बुड़बुड़ाहट सुनी कि वह किस तरह नाराज थी।

उसकी नाराजी से उसको लगा कि वह राजकुमारी को कहीं कोई शाप वाली भेंट न दे दे सो जैसे ही वे सब खाना खा कर मेज पर से उठे तो वह परी वहाँ से चली गयी और दीवार पर लटकी हुई एक बड़ी सी कपड़े की तस्वीर के पीछे जा कर छिप गयी ताकि वह अपनी भेंट सबसे आखीर में दे सके और उस बूढ़ी परी के शाप को कम से कम कर सके।

इस बीच सब परियों ने राजकुमारी को अपनी अपनी भेंटें देनी शुरू कीं। सबसे छोटी परी ने उसको यह भेंट दी कि वह दुनियाँ की सबसे सुन्दर लड़की बने। दूसरी परी ने उसको यह भेंट दी कि उसमें देव दूत[33] की तरह बात करने की होशियारी हो।

तीसरी परी ने उसको यह भेंट दी कि वह जो कोई भी काम करे वह बहुत ही सलीके से करे। चौथी परी ने उसको यह भेंट दी कि वह सबसे अच्छा नाचे।

पाँचवीं परी ने उसको यह भेंट दी कि वह कोयल की तरह गाये। और छठी परी ने उसको यह भेंट दी कि वह हर तरह का संगीत बहुत अच्छी तरह से बजा सके।

अब भेंट देने की उस बूढ़ी परी की बारी थी।

---

[33] Translated for the word “Angel”

अपनी उम्र से ज़्यादा ज़ोर से अपना सिर हिला कर वह बोली कि राजकुमारी का हाथ किसी तकुए[34] से छिद जाये और वह उसके घाव से मर जाये। इस भयानक भेंट को सुन कर तो वे सब परियाँ और वहाँ बैठे सब लोग काँपने लगे और रोने लगे।

इसी पल वह नौजवान परी उस दीवार पर लगी कपड़े की तस्वीर के पीछे से निकल कर आयी और ज़ोर से बोली — "तुम सब विश्वास रखो ओ राजा और रानी कि तुम्हारी बेटी इस तरह से नहीं मरेगी।

यह सच है कि मेरे पास इस शाप का जो कि मेरे बड़ों ने दिया है पूरी तरीके से कोई तोड़ नहीं है पर फिर भी मैं इसको हल्का जरूर कर सकती हूँ।

राजकुमारी के हाथ में तकुआ चुभेगा जरूर पर वह उससे मरने की बजाय केवल एक गहरी नीद में सो जायेगी। वह इस नींद में **100** साल तक सोती रहेगी। फिर एक राजकुमार आयेगा और उसको जगायेगा।"

राजा ने उस बूढ़ी परी की घोषणा को सच न होने देने के लिये अपने पूरे राज्य में मुनादी पिटवा दी कि कोई तकुए या तकली से न काते। यहाँ तक कि उनको अपने घर में भी न रखे।

---

[34] Both Takuaa and Takalee are made of iron and spin the thread, Takuaa fixed in a Charakha, while Takalee independently. Here see the picture of a Takalee above.

15–16 साल बाद राजा और रानी अपने एक दूसरे घर में आनन्द मनाने के लिये गये तो वह नौजवान राजकुमारी अपना समय गुजारने के लिये महल में ऊपर नीचे चक्कर काटने लगी।

जब वह ऊपर एक कमरे में से दूसरे कमरे में जा रही थी तो वह मीनार के ऊपर बने एक छोटे से कमरे में आयी जहाँ एक बुढ़िया अकेली बैठी अपनी तकली से सूत कात रही थी। उस बुढ़िया ने राजा की घोषणा नहीं सुनी थी।

राजकुमारी ने उससे पूछा — "मैम आप यहाँ क्या कर रही हैं?"

बुढ़िया बोली — "मेरी बेटी, मैं सूत कात रही हूँ।"

बुढ़िया को यही नहीं मालूम था कि वह किससे बात कर रही थी।

राजकुमारी बोली — "आहा। यह तो बहुत सुन्दर है। यह आप कैसे करती हैं। यह तो मुझे भी करना है। मुझे दीजिये न मैं भी इसे करना चाहती हूँ।"

जैसे ही राजकुमारी ने उस तकली को हाथ में लिया तो या तो वह जल्दी में थी और या फिर उसको उसे पकड़ने की आदत नहीं थी और या फिर उस परी के शाप से वह तकली उसके हाथ में चुभ गयी।

तकली के चुभते ही वह नीचे गिर गयी और वह एक गहरी नींद सो गयी। उस बुढ़िया को समझ में ही नहीं आया कि वह इस हालत में क्या करे सो वह सहायता के लिये चिल्लायी।

महल के सारे कमरों में से सारे लोग वहाँ आ कर जमा हो गया। उन्होंने राजकुमारी के मुँह पर पानी छिड़का, हवा की, उसकी जाली[35] ढीली की, उसके हाथों की हथेलियाँ मलीं, उसके कानों की कनपटियाँ मलीं पर फिर भी राजकुमारी होश में नहीं आयी।

यह सब शोर सुन कर राजा भी वहाँ आ गया। उसने सोचा कि शायद यही वह पल था जिसका उस बूढ़ी परी ने राजकुमारी को शाप दिया था। पर उसको यह भी पता था कि यह समय भी गुजर जायेगा क्योंकि परियों ने ऐसा कहा था।

ऐसा सोच कर वह अपनी बेटी को अपने महल के सबसे अच्छे कमरे में ले गया और वहाँ एक बहुत ही सुन्दर सोने चाँदी के धागे से कढ़े हुए बिस्तर पर सुला दिया।

वह इतनी सुन्दर थी कि कोई भी उसको एक छोटा देव दूत समझता। इस गहरी नींद ने उसकी सुन्दरता या रंग में कोई कमी नहीं लायी थी।

[35] Translated for the words “Bodice Lace” – worn in olden times in European countries – see its picture above.

उसके गाल अभी भी लाल कारनेशन के फूलों की तरह से लाल थे। उसके होठ अभी भी मूँगे की तरह थे।

हाँ उसकी आँखें जरूर बन्द थीं पर उसकी साँस बहुत मद्धम गति से चल रही थी जिससे ऐसा लगता था कि वह मरी नहीं है।

राजा ने सबसे कहा कि वे उसको परेशान न करें बल्कि उसे शान्ति से सोने दें जब तक उस जागने का समय आता है।

वह अच्छी परी जिसने राजकुमारी की जान यह कह कर बचायी थी कि रुई की फाँस लगने पर वह मरेगी नहीं बल्कि 100 साल तक सोती रहेगी जब उस राजकुमारी के साथ ऐसा हुआ उन दिनों माताकिन[36] राज्य में थी और माताकिन राज्य वहाँ से 12 हजार लीग[37] दूर था।

परन्तु एक बौने ने इस घटना की सूचना उस परी को तुरन्त ही दे दी जिसके सात लीग लम्बे जूते थे। वह अपने इन सात लीग लम्बे जूतों से एक कदम में सात लीग चल सकता था।

---

[36] Matakim Kingdom.

[37] A league is a unit of length. It was long common in Europe and Latin America, but it is no longer an official unit in any nation. The word originally meant the distance a person could walk in an hour. On land, the league was most commonly defined as three miles, though the length of a mile could vary from place to place and depending on the era. At sea, a league was three nautical miles (6,076 yards; 5.556 kilometers). So it all depends on the era and place.

यह सुनते ही वह परी वहाँ तुरन्त ही दौड़ी चली आयी। वह वहाँ ड्रैगन से खींचे हुए आग के रथ में बैठ कर एक घंटे में ही वहाँ आ गयी।

राजा ने उसको उसके रथ से बाहर निकाला और उसको बताया कि उसने राजकुमारी को एक अलग कमरे में सुला दिया है। परी ने कहा कि राजा ने ठीक ही किया था।

पर परी को तो बहुत आगे का दिखायी देता था सो उसने सोचा कि जब राजकुमारी उठेगी तो इस पुराने महल में अकेले होने की वजह से वह शायद यह न जान पाये कि उसको अपने साथ क्या करना है।

सो उसने अपनी जादू की छड़ी से सिवाय राजा और रानी के उस कमरे की हर चीज़ को छुआ – वहाँ की नौकरानियाँ, उसके सोने के कमरे में रहने वाली दासियाँ, आदमी लोग, औफीसर्स, नौकर लोग, रसोइये, चौकीदार, घुड़साल के घोड़े, राजकुमारी का प्रिय कुत्ता जो राजकुमारी के बिस्तर पर उसके साथ ही लेटा हुआ था आदि आदि।

उसकी जादू की छड़ी से छूते ही वे सब उस राजकुमारी के साथ साथ ही सो गये। ताकि वे राजकुमारी के जागने से पहले न जागें पर जब वह उठे तो वह उसकी सेवा में खड़े रहें जबकि उसको उनकी जरूरत होगी। उसने उसी समय कुछ चिड़ियें[38] भी सुला दीं।

[38] Partridges and pheasants

यह सब उस परी ने बहुत जल्दी ही कर दिया। परियाँ अपना काम करने में देर नहीं लगातीं। राजा और रानी ने भी अपनी बेटी को बिना जगाये हुए चूमा और महल से बाहर चले गये और घोषणा कर दी कि कोई भी उस महल के पास भी आने की हिम्मत न करे।

यह जरूरी तो नहीं था पर फिर भी **15** मिनट के अन्दर अन्दर उस महल के चारों तरफ बागीचे उग गये जिनमें ऊँचे नीचे, छोटे बड़े, घने छायादार, पेड़ और झाड़ियाँ लगी हुई थीं। बहुत सारी बेलें एक दूसरे में उलझी हुई इधर से उधर जा रही थीं।

उन बागीचों में से कोई आदमी या कोई जंगली जानवर गुजर कर अन्दर नहीं जा सकता था। बाहर से अन्दर का कुछ दिखायी भी नहीं देता था सिवाय एक मीनार की चोटी के। और वह भी महल से काफी दूरी से।

किसी को इस बात पर शक नहीं था कि उस परी ने अपनी यह एक बहुत अच्छी कला दिखायी थी कि सोती हुई राजकुमारी को किसी आदमी का अपनी उत्सुकतावश उसको जगाने का कोई डर ही न रहे।

इस तरह वह राजकुमारी **100** साल तक वहाँ सोती रही। कि एक दिन उस समय के राजा का बेटा जो राजकुमारी के परिवार का नहीं था उधर शिकार के इरादे से उधर आ निकला।

उसने पूछा — "इस घने जंगल में ये मीनार कैसी है?"

जिसने जो सुना था और जो कुछ उस मीनार के बारे में जानता था वह उसको बताया। कुछ ने कहा कि वह मीनार किसी बहुत ही पुराने भुतहा किले की थी। दूसरे बोले कि वहाँ एक किला था और उस किले में जादूगर और जादूगरनियाँ[39] अपनी मीटिंगें करते थे।

पर सबका सामान्य विचार यह था कि वहाँ एक ओगरे[40] रहता है जो सारे छोटे छोटे बच्चों को जो भी उसको मिलते हैं वहाँ ले जाता है और जब उसका मन होता है तो वह उनको खा जाता है।

वहाँ तक उसके पीछे पीछे कोई नहीं जा सकता था क्योंकि वह जंगल इतना घना था कि उस घने जंगल में से हो कर केवल वही ओगरे ही जा सकता है और दूसरा कोई नहीं।

राजकुमार यह सोचता वहीं खड़ा का खड़ा रह गया कि वह उनमें से किसकी बात का विश्वास करे और किसकी बात का नहीं।

अभी वह यह सोच ही रहा था कि वहीं का एक गाँव वाला बोला — "अगर आपको अच्छा लगे तो योर हाईनैस, मैं आपको एक बात बताता हूँ। मैंने **50** साल पहले अपने पिता से यह सुना

---

[39] Translated for the words "Sorcerers and witches"

[40] An ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings. See its picture above.

था और उन्होंने भी यह अपने बाबा से सुना था कि इस महल में एक राजकुमारी रहती थी।

वह राजकुमारी बहुत सुन्दर थी। उसको यहॉ **100** साल तक सोना है और एक राजकुमार को आ कर उसको जगाना है जिसके लिये वह बनायी गयी थी।"

वह नौजवान राजकुमार तो यह सुन कर उछल पड़ा। उसने उस आदमी की बात का विश्वास किया और वह उस राजकुमारी के प्रेम और इज़्ज़त के लिये यह काम करने को तैयार हो गया।

वह जंगल की तरफ बढ़ा ही था कि वे ऊँचे नीचे, छोटे बड़े, घने छायादार, पेड़ और झाड़ियॉ और बहुत सारी बेलें जो एक दूसरे में उलझी हुई इधर से उधर जा रही थीं सबने उसको रास्ता दे दिया।

इस तरह से वह बिना किसी मुश्किल के उस बागीचे को पार कर उस चौड़े रास्ते पर पहुॅच गया जिसके अन्त में उसको वह महल दिखायी दे रहा था।

पर उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसका कोई भी आदमी उसके पीछे नहीं आ सका क्योंकि जैसे ही वह उन घने पेड़ों में से गुजरता वे पेड़ उसके पीछे फिर वैसे ही बन्द हो जाते जैसे वह पहले थे।

पर उसने चलना नहीं छोड़ा वह चलता ही रहा। एक नौजवान और शानदार राजकुमार था वह। चलते चलते वह बाहर वाले एक

बहुत बड़े आँगन में आ गया जहाँ उसने जो कुछ भी देखा वह सब ऐसे जमा पड़ा था जैसे कोई सबसे निडर आदमी भी डर से जम गया हो।

चारों तरफ वहाँ एक डरावना सन्नाटा था। हर तरफ उसको वहाँ मौत नजर आ रही थी। वहाँ उसको कुछ और नजर ही नहीं आ रहा था सिवाय आदमियों और जानवरों के शरीरों के और वे शरीर भी उसको सब मरे हुए लग रहे थे।

पर उनके गुलाबी चेहरों और मुहाँसों वाली नाकों से उसको लगा कि वे मरे हुए नहीं थे बल्कि केवल सोये हुए थे। उनके शराब के प्यालों में कुछ शराब अभी भी बाकी थी इससे उसको लगा कि जैसे वे शराब पीते पीते ही सो गये होंगे।

उसके बाद उसने संगमरमर का एक आँगन पार किया और सीढ़ी चढ़ कर चौकीदारों वाले कमरे में पहुँच गया जहाँ चौकीदार खड़े हुए थे। उनके कन्धों पर उनके बिल्ले लगे हुए थे और वे भी बहुत ज़ोर ज़ोर से खर्राटे भर रहे थे।

वह और दूसरे कमरों में भी गया जहाँ कुछ कुलीन आदमी और स्त्रियाँ खड़े हुए थे और कुछ बैठे हुए थे। वे सब भी सोये हुए थे।

आखिर वह एक ऐसे कमरे में आ पहुँचा जो सारा का सारा सोने का बना हुआ था। वहाँ उसने एक बिस्तर देखा जिसके परदे खुले हुए थे और उस पर लेटी हुई थी एक बहुत सुन्दर राजकुमारी, **15** या **16** साल की। उसकी सुन्दरता तो बस उसको दैवीय लगी।

मन ही मन उसकी तारीफ करते हुए वह कॉपता सा आगे बढ़ा और उसके पास जा कर घुटनों के बल बैठ गया। बस अब जादू टूटने ही वाला था और उसका वह शाप खत्म होने ही वाला था।

राजकुमारी जाग गयी और उसकी तरफ बड़ी कोमलता से देखती हुई बोली — "क्या तुम राजकुमार हो? तुमको बहुत इन्तजार करना पड़ा होगा।"

राजकुमार पहले तो उसके इन शब्दों पर ही मोहित हो गया और फिर उसके उन शब्दों के कहने के ढंग पर मोहित हो गया तो वह तो सोच ही नहीं सका कि वह अपनी खुशी किस तरह जाहिर करे और उसका धन्यवाद किस तरह दे।

उसने उसे बताया कि वह उसे अपने से भी ज़्यादा चाहता था। उनकी बातें टूटी फूटी थीं और वे रो ज्यादा रहे थे बात कम कर रहे थे। उनकी बातों में तरीका कम और प्यार ज़्यादा था।

राजकुमार राजकुमारी से ज़्यादा खोया खोया सा था। इसमें हमको आश्चर्य भी नहीं होना चाहिये क्योंकि राजकुमारी के पास तो शायद समय भी था कि वह राजकुमार से क्या कहे। हालाँकि इतिहास तो यह नहीं बताता कि क्या हुआ पर शायद परी ने उसको इस लम्बी नींद के समय सपने में सब बता दिया था।

वे लोग करीब करीब चार घंटे तक बात करते रहे पर फिर भी वे जो कुछ कहना चाहते थे उसका आधा भी एक दूसरे से नहीं कह पाये।

इस बीच सारा महल जाग गया। सब लोग अपने अपने काम के बारे में सोचने लगे। और क्योंकि बाकी के सब लोग तो प्यार नहीं कर रहे थे इसलिये वे सभी भूख से परेशान थे। वहाँ की सरदार स्त्री[41] सबको भूखा देख कर बहुत परेशान हो गयी और राजकुमारी से बोली कि रात का खाना लगने वाला था।

राजकुमार ने राजकुमारी को सहारा दे कर उठाया। उसको पूरी तरीके से शानदार कपड़े पहनाये गये। राजकुमार ने इस बात का पूरा ख्याल रखा कि वह राजकुमारी से यह न कहे कि उसने तो उसकी परदादी जैसे कपड़े पहन रखे थे।[42]

वे शीशे के बने एक बहुत बड़े कमरे में पहुँचे जहाँ राजकुमारी के औफीसरों ने उनके लिये खाना परसा और उन्होंने खाना खाया। वायलिन पर 100 साल पुराना संगीत बजाया गया।

खाना खत्म होने के तुरन्त बाद ही वहाँ के लौर्ड ने महल के चर्च में उन दोनों की शादी करा दी और उस सरदार स्त्री ने परदा खींच दिया। राजकुमार और राजकुमारी बहुत कम देर के लिये ही सो पाये।

राजकुमारी के पास कोई मौका नहीं था और राजकुमार सुबह होते ही अपनी राजधानी के लिये रवाना हो गया जहाँ उसका पिता उसके लिये परेशान हो रहा था।

---

[41] Translated for the words "Chief Lady"

[42] Because she slept 100 years ago that is why she was dressed in 100 years old type of clothes, not in modern type of clothes.

घर पहुँच कर उसने अपने पिता को बताया कि शिकार करते समय वह जंगल में रास्ता भूल गया था और उसको एक कोयला बनाने वाले को घर में शरण लेनी पड़ी। वहाँ उसने उसको खाने के लिये चीज़[43] और काली रोटी दी।

उसका पिता बहुत ही अच्छा आदमी था से उसने तो अपने बेटे का विश्वास कर लिया पर उसकी माँ को उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ कि वह सच बोल रहा है।

हालाँकि उसने ऐसा केवल तीन चार दिन ही किया था पर उसको रोज शिकार पर जाते देख और इसके लिये कोई न कोई बहाना बनाते देख उसकी माँ को लगा कि उसने कहीं शादी कर ली है क्योंकि अब तक वह राजकुमारी के साथ दो साल से रह रहा था।

अब उसके दो बच्चे हो गये थे। उसका बड़ा बच्चा लड़की थी जिसका नाम था प्रभात। उसका छोटा बच्चा लड़का था जिसका नाम था दिवा[44]। उसका नाम उन्होंने दिवा रखा था क्योंकि वह अपनी बहिन से कहीं ज्यादा सुन्दर था।

रानी माँ ने अपने बेटे से कई बार बात की कि वह अपना समय किस तरह गुजारता था पर फिर भी वह अपना भेद खोलने के लिये अपनी माँ के ऊपर विश्वास करने की हिम्मत नहीं कर सका।

[43] Cheese is a kind of processed Paneer used in Western countries

[44] “Morning” was then name of the daughter who was the elder child and “Day” was the name of the son who was the younger child.

वह उसको प्यार तो बहुत करता था पर अपना भेद उस पर खोलने से डरता था क्योंकि वह भी ओगरे की जाति की थी। उसका पिता राजा भी उससे शादी नहीं करता अगर वह बहुत अमीर न होती तो। दरबार में भी लोग यह बात करते थे कि उसकी ओगरे जैसी आदतें थीं।

जब भी वह कहीं छोटे बच्चों को इधर उधर आते जाते देख लेती तो वह उनको खाने से अपने आपको बड़ी मुश्किल से रोक पाती। इसलिये राजकुमार उससे इस बारे में एक शब्द भी नहीं बोल सकता था।

पर दो साल बाद जब राजा मर गया तो उस राजकुमार को राजा बना दिया गया। तब उसने खुले रूप से अपनी शादी की घोषणा कर दी। वह बड़ी धूमधाम से रानी को अपने महल में ले आया। वे सब बड़ी शान से उसकी राजधानी में घुसे। राजकुमारी दोनों बच्चों के बीच में थी।

पर बदकिस्मती से बहुत जल्दी ही राजा को लड़ाई पर जाना पड़ा। असल में उसके पड़ोसी बादशाह कौन्टैनालाबुत्ते[45] ने उसके ऊपर चढ़ाई कर दी थी।

[45] Contanalabutte – name of the King who invaded the Prince

सो उसने अपना राज्य अपनी रानी माँ के ऊपर छोड़ा और अपनी पत्नी और बच्चों की ठीक से देख भाल करने के लिये कहा। सारी गर्मियाँ वह लड़ाई के मैदान में ही रहा।

जैसे ही उसका बेटा लड़ाई पर चला गया उसने अपनी बहू को जंगल में बने एक अलग घर में भेज दिया ताकि वह वहाँ पर अपनी मरजी पूरी कर सके।

कुछ दिन बाद उसने अपनी रसोई के रसोइये का बुलाया और उससे कहा कि वह अगले दिन छोटी प्रभात को शाम के खाने में खाना चाहती है।

रसोइये के मुँह से एक चीख सी निकल गयी। रानी माँ बोली मुझे उसी को खाना है और उसको सौस के साथ खाना है। और यह उसने इस तरह कहा जैसे कि जब किसी ओगरे को आदमी का माँस खाने की इच्छा होती है तब वह बोलता है।

रसोइया जानता था कि ओगरों के साथ कोई चाल नहीं खेलनी चाहिये सो उसने एक बड़ा सा चाकू लिया और प्रभात के कमरे में गया। प्रभात उस समय चार साल की थी। जैसे ही उसने रसोइये को देखा वह हँसती कूदती हुई उसके गले से लिपट गयी और उससे उसने कैन्डी माँगी।

यह देख कर रसोइये के हाथों से चाकू छूट गया और वह उस मकान के पीछे वाले आँगन में चला गया। वहाँ उसने एक छोटा सा

मेंमना[46] मारा। उसको उसने सौस में इस तरह पकाया कि रानी माँ ने उसकी बार बार तारीफ की कि उसने इतना अच्छा खाना कभी नहीं खाया।

उसी समय उसने छोटी प्रभात को अपनी पत्नी दे दिया और उससे कहा कि वह उसको अपने घर में छिपा कर रखे जो आँगन में नीचे की तरफ था।

आठ दिन बाद रानी माँ ने रसोइये से कहा कि वह अब छोटे दिवा को खाना चाहती थी। रसोइये ने कोई जवाब नहीं दिया पर उसने इस बार भी रानी माँ को पिछली बार की तरह धोखा देने का फैसला कर लिया।

वह छोटे दिवा को ढूँढने गया तो उसे वह एक बन्दर के चारों तरफ एक छोटी दीवार बनाता मिल गया। उस समय वह केवल तीन साल का था।

उसने उसे अपनी बाँहों में उठाया और अपने घर ले गया और अपनी पत्नी को दे कर बोला कि वह उसको भी उसकी बहिन के साथ ही रख ले। दिवा के कमरे में उसने एक छोटे से मेंमने को मारा और पका कर रानी माँ को खिला दिया जो उसने बहुत चटखारे ले ले कर खाया।

---

[46] Translated for the word "Lamb"

यहाँ तक तो सब ठीक था पर एक दिन रानी माँ ने रसोइये से कहा — "मैं रानी को भी उसी सौस से खाना चाहती हूँ जिससे मैंने उसके बच्चों को खाया था।"

इस बार रसोइया बेचारा मुश्किल में पड़ गया कि वह इस बार उसको धोखा कैसे दे। राजा की वह नौजवान रानी इस समय केवल **20** साल की थी।

इसके अलावा उसके ऊपर **100** साल की नींद की वजह से उतने सालों का कोई असर भी नहीं था। उसको यह समझ में नहीं आ रहा था कि उसके माँस जैसे माँस वाला जानवर वह कहाँ से लायेगा।

उसको एक तरकीब समझ में आयी जो उसको रानी को मारने से बचा सकती थी। सो वह अपनी तरकीब को इस्तेमाल में लाने के लिये तुरन्त ही रानी के कमरे की तरफ चल दिया।

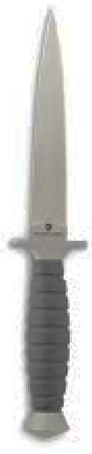

उसने अपने चेहरे के ऊपर जितना ज़्यादा गुस्सा ला सकता था ले आया और अपने हाथ में एक कटार[47] ले कर उस नौजवान रानी के कमरे में आया। वह उसको चौंका देना तो नहीं चाहता था पर उससे बडी इज़्ज़त के साथ उसने उसको रानी माँ का हुकुम सुनाया।

[47] Translated for the word "Dagger" – see its picture above. It might be of the shape of a sword also as a Sikh keeps always with him.

तो रानी अपनी गरदन आगे बढ़ा कर बोली — "तो कर दो। रानी माँ के हुकुम का पालन करो। फिर मैं अपने बच्चों को देखने चली जाऊँगी – मेरे बेचारे बच्चे जिनको मैं कितना प्यार करती थी।"

जबसे उसके बच्चे उसके पास से उसको बिना बताये ले लिये गये थे तबसे अब तक वह यही समझती थी कि वे मर चुके हैं।

यह सुन कर रसोइया रो कर बोला — "नहीं मैम नहीं। आप मरेंगी नहीं। आप अपने बच्चों को फिर से देखेंगी पर उसके लिये आपको मेरे घर जाना पड़ेगा जहाँ मैंने उनको छिपा कर रखा है।

मैं रानी माँ को एक बार फिर धोखा देना चाहता हूँ। मैं आपके माँस के बदले में उनको एक हिरनी का माँस खिला दूँगा।"

कह कर वह रानी को अपने घर ले गया जहाँ उसने उसे उसके बच्चों से मिलवाया। वहाँ वह उनको अपनी छाती से लगा कर बहुत देर तक रोती रही।

उधर वह रसोइया वहाँ से चला आया और एक छोटी हिरनी को मार कर उसका माँस पका कर रानी माँ को खिला दिया। रानी माँ ने उसको भी चटखारे ले ले कर ऐसे खाया जैसे कि वह रानी का माँस खा रही हो।

रानी माँ अपनी इस बेरहमी से बहुत खुश थी। उसने अपने राजा बेटे को उसके वापस लौटने पर उसको सुनाने के लिये एक

कहानी भी गढ़ ली थी कि किस तरह पागल भेड़िये उसकी पत्नी और दोनों बच्चों को खा गये थे।

एक शाम रोज की तरह जब वह अपने आँगनों में ताजा माँस की खोज में घूम रही थी तो उसने जमीन के नीचे वाले कमरे में छोटे दिवा को रोते सुना क्योंकि उसकी माँ उसको उसकी शैतानियों पर मार रही थी। उसी समय उसने प्रभात को अपने भाई को माफ कर देने के लिये भी सुना।

रानी माँ रानी और उसके बच्चों की आवाजें पहचानती थी सो वह इस विचार से ही पागल सी हो गयी कि उसको धोखा दिया गया था।

अगले दिन सुबह ही वह अपनी भयानक आवाज में चिल्लायी कि महल के आँगन के बीच में एक बड़ा सा टब लाया जाये जिसको मेंढकों और कई तरह के साँपों से भर दिया जाये। उसमें रानी और उसके दोनों बच्चे, रसोइया और उसकी पत्नी और उसकी दासी सबको फेंक दिया जायेगा।

उसने फिर इन सबको उनके हाथ पीछे बाँध कर वहाँ लाने के लिये कहा। उनको इसी तरह वहाँ लाया गया। रानी माँ के आदमी उन सबको उस टब में फेंकने ही वाले थे कि तभी राजा जिसके आने की उस समय कोई उम्मीद नहीं थी घोड़े पर सवार वहाँ आ गया।

उसको वह सब वहाँ देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने आते ही पूछा कि वह सब वहाँ क्या हो रहा था। किसी की उससे कुछ कहने की हिम्मत ही नहीं पड़ी।

उसी समय गुस्से से भरी उस ओगरैस ने अपने आपको सिर के बल उस टब में फेंक दिया। उसी समय उन जानवरों ने रानी माँ को खा लिया जिनको उसने दूसरों को खाने के लिये वहाँ इकट्ठा किया था।

राजा को इस बात का बहुत अफसोस हुआ क्योंकि आखिर वह उसकी माँ थी पर उसे अपनी पत्नी और बच्चों को ज़िन्दा देख कर बहुत खुशी हुई। उसके बाद वे सब आराम से रहे।

7 बहू ऐथना[48]

सोती हुई सुन्दरी जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के आयरलैंड देश की कहानियों से ली गयी है।

जहाँ तक हमारी जानकारी जाती है परियाँ दुनियाँ की स्त्रियों की सुन्दरता से बहुत प्रभावित रहती हैं और राजा फ़िनवारा[49] ने तो अपने बहुत सारे लोग सुन्दर सुन्दर लड़कियों और बहुओं को ढूँढ कर उसके पास लाने में लगा रखे थे।

ये लड़कियाँ राजा के टुआम में नौकमा में[50] परियों के महल में जाने के लिये जादू के ज़ोर से बहुत उत्साहित थीं जहाँ वे परियों के जादू में रहती थीं।

वहाँ जा कर वे अपनी धरती की ज़िन्दगी को बिल्कुल ही भूल कर रहती थीं और परियों का आराम देने वाला मीठा संगीत सुन कर बहुत ही आलस का मनोरंजन करती थीं जैसे कि वे कोई मीठा सपना देख रही हों। उस संगीत में सुनने वाले को आधा बेहोश करने और आनन्द देने की ताकत थी।

---

[48] Ethna the Bride – a folktale from Ireland, Europe. Taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/abduct.html#ethna
AL Ashliman from whose Web Site this story has been taken, has classified this story under "Abducted by Aliens" but at the same time he has categorized it under "Sleeping Beauty" like stories too that is why it is given here. Read yourself and find the difference between the two categories yourself.
[49] King Finvarra – the King of Fairies
[50] In Knockma in Tuam

उस समय देश के एक हिस्से में एक लौर्ड[51] रहता था जिसकी पत्नी का नाम था ऐथना। वह बहुत सुन्दर थी। या यों कहो कि वह उस देश में सबसे सुन्दर लड़की थी। उसके पति को भी उस पर इतना नाज़ था इतना कि अक्सर रोज ही उसके घर में उसके सम्मान में कोई न कोई जश्न मनाया जाता रहता।

सुबह से ले कर शाम तक उसके घर में और दूसरे लौर्ड और उनकी पत्नियों का जमघट लगा रहता और हर समय वहाँ संगीत नाच और दावतें चलती रहतीं और शिकार आदि मनोरंजन की बातें होती रहतीं।

एक शाम जब दावत ज़ोरों पर थी तो ऐथना अपने नाच के बीच अपनी चाँदी जैसी पोशाक में हवा में उड़ी जिसमें आसमान के सितारों से भी कहीं ज़्यादा चमकीले जवाहरात जड़े हुए थे।

उस समय उसने अचानक ही अपने साथी का हाथ छोड़ दिया और वह बेहोश हो कर गिर पड़ी। कुछ लोग उसको उसके कमरे तक ले गये जहाँ वह काफी देर तक बेहोश पड़ी रही।

जब सुबह हुई तब वह उठी तो उसने बताया कि उसने तो अपनी रात एक बहुत ही सुन्दर महल में गुजारी थी और वहाँ वह इतनी खुश थी कि वह फिर से सोना चाहती थी और सपने में फिर से वहाँ जाना चाहती थी। सो उसके घर वाले सारा दिन उसको ध्यान से देखते रहे।

---

[51] Lord is a title substituted informally for Marquis, Earl, Viscount etc.

शाम हुई और जब उसके महल पर शाम का अँधेरा गहरा होने लगा तो खिड़की से धीमा धीमा सा संगीत सुनायी देने लगा। ऐथना जादू के ज़ोर से फिर से गहरी नींद सो गयी।

लोगों ने उसको जगाने की बहुत कोशिश की पर कोई उसको जगाने में कामयाब न हो सका। तो उसकी पुरानी आया को उसके सोने के कमरे में उसके पहरे पर बिठा दिया गया ताकि वह उस पर निगाह रख सके कि वह रात को क्या करती है।

पर वह आया उस खामोशी और अकेलेपन में बैठे बैठे ऊब गयी और थक गयी सो वह भी सो गयी और जब तक सूरज नहीं निकला तब तक उसकी आँख ही नहीं खुली।

उठने पर उसने देखा कि ऐथना तो अपने बिस्तर पर ही नहीं थी। वह तो वहाँ से गायब हो चुकी थी।

यह देख कर सारे घर को उठाया गया और उसको ढूँढा गया पर पूरे महल में उसका कोई अता पता नहीं था – न बागीचे में ना ही किसी पार्क में।

उसके लौर्ड पति ने उसकी तलाश में चारों तरफ अपने आदमी भेजे पर कोई फायदा नहीं। उनको भी वह कहीं नहीं मिली। उसको किसी ने कहीं नहीं देखा था। उसका कहीं कोई निशान भी नहीं मिल रहा था – न ज़िन्दा का ना मुर्दा का।

सो वह नौजवान लौर्ड अपने सबसे तेज़ घोड़े पर चढ़ा और अपने बहुत अच्छे दोस्त परी राजा फ़िनवारा से बात करने के लिये

सीधा नौकमा चल दिया कि शायद वह उसकी पत्नी के बारे में उसको कुछ बता सके या फिर उसका कुछ अता पता बता सके कि वह कहाँ मिल सकती है।

नौजवान लौर्ड के हुकुम से उसके महल की खिड़की के बाहर स्पेनिश शराब की बहुत सारी बोतलें छोड़ दी गयी थीं ताकि रात को अगर परियाँ वहाँ आयें तो वे उनको ले जा सकें।

पर वह यह बात तो सपने भी नहीं सोच सकता था कि उसके इस मामले में फ़िनवारा तो खुद ही गद्दार था। सो वह एक पागल की तरह उस घोड़े पर सवार फ़िनवारा के पास चला जा रहा था। वह परियों की पहाड़ी पर नौकमा पहुँच गया।

वह वहाँ अपने घोड़े को आराम देने के लिये परियों के रहने की जगह जो एक मिट्टी की गोल दीवार से घिरी हुई थी के पास रुक गया तो उसने अपने ऊपर हवा में से कुछ आवाजें सुनीं — "फ़िनवारा आज बहुत खुश है क्योंकि आखिर उसके महल में एक बहुत सुन्दर बहू आ गयी है। अब वह अपने पति का चेहरा कभी नहीं देख पायेगी।"

माँ ने जवाब दिया — "तो भी। अगर वह पहाड़ी को उसके बीच तक खोदेगा तो वह अपनी पत्नी को पा जायेगा। पर काम थोड़ा मुश्किल है और रास्ता कठिन है। और फिर फ़िनवारा की ताकत भी तो धरती के किसी भी आदमी से बहुत ज़्यादा है।"

नौजवान लौर्ड बोला — "यह तो अभी देखने वाली बात है। न तो परियाँ और न कोई शैतान और न फ़िनवारा ही मेरे और मेरी सुन्दर नौजवान पत्नी के बीच आ सकता है। मैं देखता हूँ।"

यह सुनते ही तुरन्त ही उसने अपने देश के बहुत सारे आदमी और मजदूर उनके फावड़े और कुल्हाड़ियों के साथ बुलवाये ताकि वे उनसे उस पहाड़ी को परियों के महल तक खोद सकें।

सारे लोग और मजदूर जल्दी ही आ गये। वे दिन भर पहाड़ी खोदते रहे जब तक कि वे धरती के बीच तक एक गड्ढा नहीं खोद पाये। फिर शाम के बाद वे रात को सोने के लिये चले गये।

पर अगली सुबह जब वे फिर से उस जगह को खोदने के लिये इकट्ठा हुए तो उन्होंने देखा कि उन्होंने जो मिट्टी पहले दिन गड्ढा खोद कर बाहर डाली थी वह सारी मिट्टी उस गड्ढे में फिर से भर गयी थी और वह पहाड़ी तो ऐसी दिखायी दे रही थी जैसे कभी छुई ही नहीं गयी हो खोदना तो दूर।

क्योंकि फ़िनवारा ने ऐसा ही हुकुम दिया था और वह तो हवा समुद्र और धरती सबका राजा था।

पर नौजवान लौर्ड भी बहुत बहादुर था उसने अपने आदमियों को फिर से उस पहाड़ी को खोदने का हुकुम दिया – इस बार ज़्यादा चौड़ा और गहरा।

अबकी बार वे तीन दिन तक पहाड़ी को खोदते रहे पर उसका फल तो वही निकला। दिन में वे पहाड़ी खोदते और रात को

निकली हुई मिट्टी उस गड्ढे में भर जाती और सुबह को वह गड्ढा उनको फिर से भरा हुआ मिलता।

पहाड़ी उन सबको फिर वैसी की वैसी मिलती जैसे वह कभी खोदी ही न गयी हो।

यह सब देख कर नौजवान लौर्ड दुख और गुस्से के मारे अपनी जान देने को तैयार हो गया पर अचानक उसने अपने पास ही एक आवाज सुनी जैसे कोई हवा में फुसफुसा रहा हो।

वह आवाज बोली — "तुमने जो मिट्टी खोद कर बाहर निकाली है उस पर नमक छिड़क दो तो तुम्हारा काम इसी तरह बना रहेगा।"

यह सुन कर लौर्ड की जान में जान आयी। उसने अपने आदमियों से बहुत सारा नमक इकट्ठा करवाया और उस रात जब लोगों ने अपना काम खत्म कर लिया तो सोने जाने से पहले उसने उनसे गड्ढे में से निकली हुई मिट्टी पर नमक छिड़कवा दिया।

अगली सुबह चिन्ता की वजह से सब जल्दी उठ गये कि देखें आज क्या होता है। उनकी खुशी का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि उनका खोदा हुआ गड्ढा आज वैसा ही था जैसा वे कल रात उसे छोड़ कर गये थे।

उसके चारों तरफ की मिट्टी को किसी ने छुआ भी नहीं था।

तब उस नौजवान लौर्ड को लगा कि वह फ़िनवारा से ज़्यादा ताकतवर हो गया था। उसने अपने आदमियों को और ज़्यादा मन लगा कर काम करने के लिये कहा क्योंकि इस तरीके से वे अब

परियों के महल तक जल्दी ही पहुँच जाने वाले थे जो पहाड़ी के बीच में था।

अगले दिन तक पहाड़ी का एक बहुत बड़ा हिस्सा खोदा जा चुका था। अब अगर वे धरती से कान लगा कर सुनते तो उनको परियों का संगीत भी सुनायी देने लगा था।

उन्हें कुछ आवाजें भी हवा में सुनायी देने लगी थीं। एक आवाज बोली — "अब देखो न फ़िनवारा कितना उदास है कि अब अगर इस धरती के आदमी ने इस परियों के महल पर एक और फावड़ा मारा तो यह महल टुकडे टुकड़े हो जायेगा और कोहरे की तरह गायब हो जायेगा।"

दूसरी कोई आवाज बोली — "उसके बाद हम सब सुरक्षित हो जायेंगे।"

इसके बाद पहाड़ी में से आती हुई फ़िनवारा की अपनी आवाज सुनायी दी, इतनी साफ जैसे चाँदी की घंटी बोलती है — "ओ लोगों अपना यह काम बन्द करो। अपने अपने फावड़े फेंक दो। शाम को सूरज डूबने के समय बहू उसके पति को वापस दे दी जायेगी। यह मैं फ़िनवारा बोल रहा हूँ।"

यह सुन कर नौजवान लौर्ड ने खुदायी का काम बन्द कर दिया और अपने आदमियों से शाम तक जब तक सूरज डूबता है तब तक के लिये अपने फावड़े रख देने के लिये कहा।

शाम को वह अपने चैस्टनट[52] रंग वाले घोड़े पर चढ़ा और घाटी के ऊपर की तरफ चला गया और वहाँ जा कर इन्तजार करने लगा।

जैसे ही सूरज डूबा और आसमान में लाली फैली उसने देखा कि उसकी पत्नी अपनी उसी चाँदी के रंग वाली पोशाक पहने चली आ रही है। वह पहले से भी ज़्यादा सुन्दर लग रही थी।

तुरन्त ही वह अपने घोड़े की जीन[53] से कूद पड़ा और उसको उठा कर घोड़े पर अपने सामने बिठा लिया। उसको बिठा कर वह तूफान की तरह से अपने घर वापस दौड़ लिया। वहाँ जा कर उसने ऐथना को उसके पलंग पर लिटा दिया। वहाँ लेट कर ऐथना ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और एक शब्द भी नहीं बोली।

दिन पर दिन गुजरते रहे पर ऐथना न तो बोली और न ही मुस्कुरायी। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी जादू के असर में पड़ी हो या फिर गहरी नींद सो रही हो।

उसके इस तरह से रहने पर सारे लोग बहुत दुखी हो गये क्योंकि उनको डर था कि शायद उसने परियों वाला खाना खा लिया

[52] Chestnut is a kind of nut which is very common nut in European countries. Seeit picture above. This is the color of which the Lord’s horse was.

[53] Translated for the word “Saddle” – see its picture above. Saddle is the seat, normally made of leather, to sit upon the horse.

है और अगर ऐसा है तो उस पर पड़ा हुआ यह जादू फिर कभी नहीं टूटने वाला। उसके पति की हालत तो बहुत ही खराब थी।

पर एक दिन जब वह देर से घर लौट रहा था तो उसने हवा में कुछ आवाजें सुनी।

उनमें से एक आवाज ने कहा — "एक साल और एक दिन हो गया है जबसे यह नौजवान लौर्ड अपनी पत्नी को फ़िनवारा के महल से ले कर आया है पर यह उसके लिये क्या अच्छी है।

यह तो कुछ बोलती भी नहीं है और बिल्कुल मरे हुओं की तरह पड़ी है। क्योंकि इसकी आत्मा तो परियों के पास है और इसका केवल शरीर ही इसके पति के पास है।"

दूसरी आवाज बोली — "और यह तब तक ऐसी ही रहेगी जब तक कि इसके ऊपर डाला हुआ जादू नहीं टूट जायेगा। इसका जादू तोड़ने के लिये इसके पति को इसकी कमर में बॅधी हुई पेटी खोलनी चाहिये और एक जादू डाली गयी पिन जो इसके कपड़ों में छिपी है से बॉध देनी चाहिये।

उसके बाद उसको उस पेटी को जला देना चाहिये और उसकी राख उसे अपने दरवाजे के सामने डाल देनी चाहिये और उस पिन को उसे जमीन में गाड़ देना चाहिये।

तभी परियों की दुनियॉ से इसकी आत्मा वापस आ पायेगी और यह धरती पर अपनी सच्ची और सामान्य ज़िन्दगी बिता पायेगी।"

यह सुन कर नौजवान लौर्ड ने तुरन्त ही अपने घोड़े को एड़ लगायी और अपने महल पहुँच कर उस कमरे में गया जहाँ उसकी ऐथना अपने काउच पर चुपचाप और एक मोम की मूर्ति की तरह लेटी हुई थी।

नौजवान लौर्ड ने उन आत्माओं की आवाजों की सच्चाई जानने का पक्का इरादा बना लिया था सो उसने तुरन्त ही ऐथना की कमर से उसकी पेटी निकाली। फिर बड़ी मुश्किल से उसके कपड़ों की तह में से जादू डाली गयी पिन निकाली पर ऐथना अभी तक एक शब्द भी नहीं बोली थी।

फिर उसने वह पेटी जलायी और उसकी राख अपने दरवाजे के सामने फेंक दी। उसने उसके कपड़ों में से निकाली गयी पिन जमीन में एक गहरा गड्ढा खोद कर एक परियों के काँटे के नीचे गाड़ दी ताकि उसको वहाँ कोई देख भी न सके।

इस सबको करने के बाद वह अपनी पत्नी के पास लौट आया तो उसने देखा कि वह जाग गयी थी। वह उसको देख कर मुस्कुरा दी और अपना हाथ उसकी तरफ बढ़ाया।

नौजवान लौर्ड तो उसको इस तरह ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हो गया। उसने उसको उठा कर बिठाया और उसे चूम लिया।

उसके उसे चूमते ही उसकी बोली और यादें और पुरानी ज़िन्दगी सब वापस आ गयीं जैसे इससे पहले कभी उसको कुछ हुआ ही नहीं था।

वह एक साल जो वह सोती रही वह बाद में उसको केवल एक सपना ही लगता रहा जैसे उससे वह अभी अभी जागी हो।

Sleeping Beauty Like Stories

1. Sleeping Beauty
2. Little Brier-Rose
3. The Glass Coffin
4. Sun Moon and Talia
5. Sleeping Beauty and Her Children
6. Sleeping Beauty in the Wood
7. Ethna the Bride

Books in “One Story Many Colors” Series

1. Cat and Rat Like Stories
2. Tom Thumb Like Stories
3. Six Swans Like Stories
4. Three Oranges Like Stories
5. Snow White and the Seven Dwarves Like Stories
6. Sleeping Beauty Like Stories
7. Pig King Like Stories
8. Puss in Boots Like Stories
9. Hansel and Gratel Like Stories
10. Red Riding Hood Like Stories
11. Cinderella Like Stories
12. Cinderella in the World
13. Rumplestiltuskin Like Stories
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories
15. Crocodile and Monkey Like Stories

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहॉ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहॉ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहॉ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहॉ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहॉ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहॉ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको “देश विदेश की लोक कथाऐं” क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**